RNI No UPHIN/2015/65982

₹10

समाज जागरण का शंखनाद

अवध प्रहरी

वर्ष : 12 अंक : 12 16-30 जून 2026

दोस्ती की आड़ में जिहाद

नवनिर्माण के वर्ष

पहले भय का परिवेश
आज पर्यटन प्रदेश

अपना यूपी बदल गया

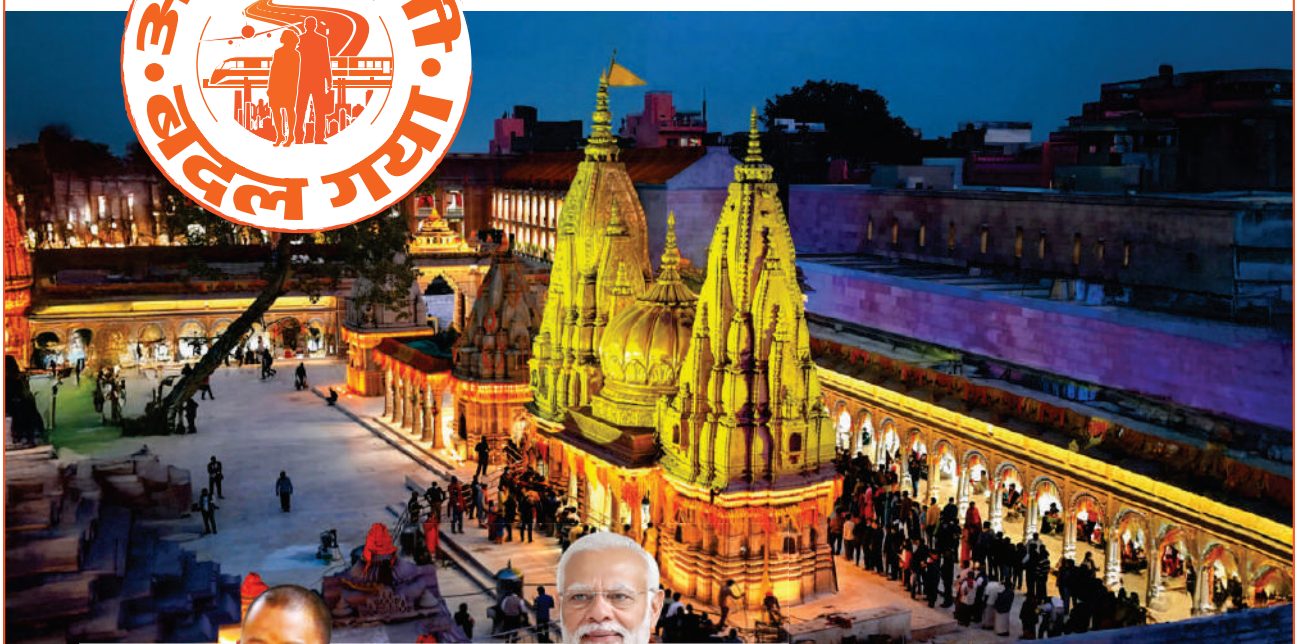

2017 में
23.7 करोड़ पर्यटक

2025 में
156 करोड़+
पर्यटक

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

UPGovtOfficial CMOUttarpradesh CMOfficeUP

समाज जागरण का शंखनाद

अवध प्रहरी

पाक्षिक

वर्ष : 12 अंक : 12

RNI. No. UPHIN/2015/65982

सम्पादक
शिवबली विश्वकर्मा

सम्पादक मण्डल
डॉ. अनूप आनन्द
सुरेश सिंह
विवेक रॉय
मृत्युंजय दीक्षित

कार्यालय
संस्कृति भवन
राजेन्द्र नगर, लखनऊ-226004

ई-मेल
avadhprahari@gmail.com

मुद्रक एवं प्रकाशक शम्भू दयाल पुरवार द्वारा भारतीय संस्कृति पुनरुत्थान समिति के लिए नूतन आफसेट मुद्रण केन्द्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नग्र लखनऊ दूरभाष +91-6389500007, 9151522252 से मुद्रित एवं संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर लखनऊ से प्रकाशित।

Scan & Subscribe

अनुक्रम

दोस्ती की आड़ में जिहाद 04

जब सत्ता बनी तानाशाह और संघ बना... 07

कबीर-वाणी में सनातन सांस्कृतिक बोध 09

"वे हमारे अपने हैं" 10

राष्ट्रनायक राजा दाहिर सेन 11

बीरबल साहनी पुराविज्ञान संस्थान ने खोजा... 12

भारत को वैभवशाली बनाना संघ का मूल ध्येय... 14

भारत की बेटियों के लिये प्रेरणा हैं मेजर... 15

प्राकृतिक खेती में कम लागत में ज्यादा कमायी 16

सुभाषित

सर्पः क्रूरः खलः क्रूरः सर्पात्क्रूरतरः खलः।
मन्त्रौषधिवशः सर्पः खलः केन निवार्यते॥

सर्प क्रूर होता है और दुष्ट व्यक्ति भी क्रूर होता है किन्तु साँप को तो मंत्र और औषधि के प्रयोग से वश में किया जा सकता है किन्तु दुष्ट किसी भी उपाय से शान्त नहीं किया जा सकता है।

सम्पर्क- 0522-4106333, 90 90 30 40 96

अवध प्रहरी प्रकाशन सेवा न्यास

खाता संख्या : 02510210002360
आई एफएससी : UCBA0000251
यूको बैंक, शाखा नाका, लखनऊ

पत्रिका प्राप्ति के लिए सहयोग राशि

वार्षिक सदस्यता	₹ 200
12 वर्षीय सदस्यता	₹ 1000
आजीवन सदस्यता	₹ 2000

लेखक के विचारों से सम्पादक व प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा।

संघे शक्तिः कलौ युगे

श्रीरामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदासजी ने लिखा है,... **समरथ कहुँ नहिं दोषु गोसाईं। रबि पावक सुरसरि की नाईं॥** अर्थात् सामर्थ्यवान व्यक्ति पर कोई दोष नहीं आता, सूर्य, अग्नि और गंगा अपने गुणों के कारण सदा पवित्र माने जाते हैं। सरसंघचालक डॉ. मोहन जी भागवत ने इसी आधार पर आह्वान किया है कि हिन्दुओं को अपनी रक्षा के लिये मजबूत बनना होगा, क्योंकि दुनिया केवल उन्हीं की सुनती है जिनके पास ताकत होती है। जो शक्तिशाली होता है, वह समाज में सम्मान पाता है और उसकी कमियों पर ध्यान नहीं दिया जाता इसलिये हमें भी अपने को सक्षम और श्रेष्ठ बनाना चाहिये। साथ ही हमें सामर्थ्य सम्पन्न देश भी चाहिये। भले ही उस सामर्थ्य का उपयोग दूसरों को दबाने के लिये न किया जाये। जिसका सामर्थ्य नहीं है, उसकी अच्छी बातें भी दुनिया सुनती नहीं है। कलियुग में संगठन और एकता ही वास्तविक शक्ति हैं। व्यक्ति की सीमित क्षमता सामूहिक प्रयासों से असीमित बन जाती है। यदि समाज के सभी लोग परस्पर सहयोग, विश्वास और सद्भाव की भावना के साथ संगठित होकर कार्य करें, तो अनेक सामाजिक, आर्थिक और राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान सम्भव है।

आज समाज अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना कर रहा है, वहाँ संघे शक्तिः कलौ युगे का सिद्धान्त पहले से अधिक प्रासंगिक दिखायी देता है। व्यक्ति अकेले अपनी सभी समस्याओं का समाधान नहीं कर सकता, इसलिये सामूहिकता, सहयोग और संगठन की आवश्यकता बढ़ गयी है। हमारी उन्नति समाज के साथ जुड़कर ही सम्भव है। इतिहास साक्षी है कि है कि हिन्दू समाज जब-जब एकजुट रहा है, तब-तब बड़ी से बड़ी चुनौतियों पर विजय प्राप्त की है। हिन्दुओं की एकजुटता का अर्थ है जाति, भाषा, और क्षेत्र के मतभेदों को भुलाकर एक साझा पहचान और उद्देश्य के लिये साथ आना। यह सांस्कृतिक गौरव को पुनर्जीवित करने और सामूहिक विकास के लिये अत्यन्त आवश्यक है। हमें अपनी प्राचीन परम्पराओं, ग्रंथों और जीवन मूल्यों को सुरक्षित रखना है। सामाजिक समरसता को अपनाते हुए छुआछूत और जातिगत भेदभाव को मिटाकर समाज को मजबूत बनाना है। किसी भी संकट या सामाजिक चुनौतियों का मिलकर डटकर सामना करना है। राजनैतिक व सामाजिक रूप से जागरूक रहते हुए अपने समाज की भलाई के लिये एकजुट होकर सही निर्णय लेना है। सांस्कृतिक और धार्मिक आयोजनों के माध्यम से आपसी भाईचारे को बढ़ावा देना होगा। युवाओं को अपने धर्म, इतिहास, और धर्मग्रंथों के वास्तविक ज्ञान से जोड़ना होगा। हमें समझना होगा कि हिन्दू धर्म की महानता उसकी विविधता में है, लेकिन इन सभी का मूल सनातन धर्म एक है। इस मूल भावना को पहचानना ही हिन्दू एकता की असली कुंजी है।

हिन्दू एकता का एक महान उद्देश्य होना चाहिये, मात्र महान अतीत नहीं। सभी हिन्दुओं को समानता में विश्वास करना चाहिये। हमारी जाति व्यवस्था हमारे अपने लोगों को पीड़ा दे रही है। हिन्दू एकता की किसी भी योजना की सफलता को सभी बराबरी से अपने को हिन्दू मानना होगा। आपसी आदर पर आधारित हमारे धर्म की निहित समग्रता, हमारी महानतम शक्ति है। यह याद रखना चाहिए कि शक्ति संगठन के माध्यम से ही आती है इसलिये प्रत्येक हिन्दू का कर्तव्य है कि वह हिन्दू समाज को मजबूत करने के लिये हर सम्भव प्रयास करे। देश का वर्तमान भाग्य किसी एक व्यक्ति या संगठन द्वारा नहीं बदला जा सकता है। इसके लिये सभी को प्रयास करना होगा। हिन्दू विरोधी शक्तियाँ लगातार हमें कमजोर करने और हमारी एकता को तोड़ने में लगी हैं। मतान्तरण, लव-जिहाद, लैण्ड-जिहाद जैसे षड्यंत्र हमारे विरुद्ध किये जा रहे हैं। स्वतंत्रता के बाद से भारत में हिन्दुओं की जनसंख्या लगातार घट रही है। यह अत्यधिक चिन्ता का विषय है इसलिये हम एकजुट होकर शक्तिशाली हों, तभी शत्रुओं को परास्त कर पायेंगे। अन्यथा हमारा अस्तित्व संकट में पड़ जायेगा।। ●

दोस्ती की आड़ में जिहाद

सनातन परम्परा में मित्रता को अत्यन्त पवित्र सम्बन्ध माना गया है। भगवान कृष्ण और सुदामा, कृष्ण और अर्जुन, राम और सुग्रीव, राम और निषादराज गुह, कर्ण और दुर्योधन तथा कृष्ण और उद्धव जैसे उदाहरण भारतीय संस्कृति में मित्रता, विश्वास, निष्ठा और त्याग के प्रतीक माने जाते हैं। इन सम्बन्धों का आधार स्वार्थ नहीं बल्कि परस्पर सम्मान, सहयोग और कठिन समय में साथ निभाना रहा है। हिन्दू की मित्रता और मुसलमान की दोस्ती में बहुत व्यापक अन्तर है। मुसलमानों ने भाई-बहन के रिश्तों के साथ साथ अब दोस्ती के रिश्तों को भी बदनाम कर दिया।

हाल ही में दोस्ती की आड़ में जिहाद की घटना ने मित्रता के नाम से लोगों का विश्वास उठ गया है। इतना ही नहीं मुस्लिम लड़कियों से भी दोस्ती करना अब सुरक्षित नहीं रहा, क्योंकि मुस्लिम लड़कियों के लिये भी अब उनका मजहब पहले है और दोस्ती बाद में। पिछले दिनों ऐसी कई घटनाएँ सामने आयीं जब मुस्लिम महिलाएँ ही खुद अपने दोस्तों के साथ अत्याचार बलात्कार जैसी घटनाओं को अंजाम देने में सहयोग की। हाल ही में दोस्ती के नाम पर किये गये जिहाद के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं -

बकरीद पर मुस्लिम दोस्त ने घर बुलाया, चाकू से गोंदकर मार डाला

देश की राजधानी दिल्ली से सटे **गाजियाबाद** के खोड़ा में मुस्लिम युवकों ने अपने दोस्त 11वीं के छात्र के पेट में चाकू घोंप दिया। छात्र जान बचाने के लिए 200 मीटर तक दौड़ा भी, लेकिन हमलावरों ने पीछा कर चाकू से गोद-गोदकर मार दिया।

खोड़ा के नवनीत बिहार में 17 वर्षीय सूर्या दोस्त विक्की और आयुष के साथ घूम रहा था। इसी दौरान असद ने फोन कर उसे मिलने बुलाया। सूर्या और आयुष जब असद के घर के बाहर पहुँचे, तो असद के साथ कुछ अन्य युवक थे। सभी ने बोला- 'कभी बकरा हलाल होते देखा है। आओ दिखाते हैं।' सूर्या के इनकार करने पर असद ने गाली-गलौज की। विरोध पर असद ने सूर्या के पेट पर चाकू से वार कर दिया। सूर्या जान बचाने के लिये भागा, लेकिन करीब 200 मीटर दौड़ने के बाद वह टी-पाइंट पर गिर गया।

इस बीच असद कुछ साथियों के साथ पहुँचा और सूर्या पेट से चाकू निकालकर फिर से कई वार किये। सूर्या की नोएडा के फोर्टिस अस्पताल में शुक्रवार मौत हो गयी। एसीपी इंदिरापुरम अभिषेक श्रीवास्तव ने बताया कि कुछ लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है।

हमले के दौरान मौके पर मची चीख-पुकार और शोर को सुनकर सूर्या का भाई यश चौहान और उसकी माँ तुरन्त घटना स्थल की तरफ दौड़े। परिजनों को आता देख सभी हमलावर घायल सूर्या को तड़पता हुआ गम्भीर हालत में छोड़कर मौके से फरार हो गये। परिवार वाले आनन-फानन में घायल युवक को नोएडा के सेक्टर-62 स्थित फोर्टिस अस्पताल लेकर पहुँचे, जहाँ डॉक्टरों की तमाम कोशिशों के बावजूद इलाज के दौरान सूर्या ने दम तोड़ दिया।

राखी बँधवाकर कराया धर्म-परिवर्तन, फिर की शादी

लखनऊ में रक्षाबन्धन पर जिस युवक को परिवार ने भाई का दर्जा देकर घर में आने-जाने की अनुमति दी, उसी पर विश्वास तोड़कर युवती का धर्म-परिवर्तन कराने और उससे शादी करने का आरोप लगा है। एसजीपीजीआई आवासीय परिसर में रहने वाले परिवार की 21 वर्षीय बेटी के लापता होने के मामले ने नया मोड़ ले लिया है। परिजनों का आरोप है कि इरशाद अली नामक युवक जो एसजीपीजीआई में डॉक्टर है पहले युवती से राखी बन्धवाता था और परिवार का विश्वासपात्र बन गया था, लेकिन बाद में उसने युवती को अपने प्रभाव में लेकर धर्म परिवर्तन कराया और उससे शादी कर ली। परिवार ने यह भी आरोप लगाया है कि आरोपी युवती को सीरिया ले जाने की बातें करता था तथा उसे कुछ प्रभावशाली लोगों का संरक्षण प्राप्त था। मामला सामने आने के बाद पुलिस प्रशासन सक्रिय हो गया है। युवती की तलाश के लिये विशेष टीमें गठित की गयीं हैं, जबकि आरोपी की गिरफ्तारी के प्रयास तेज कर दिये गये हैं। पुलिस मामले से जुड़े सभी पहलुओं, धर्मान्तरण के आरोपों और कथित सहयोगियों की भूमिका की जाँच कर रही है।

मुस्लिम सहेलियों ने नशीला पदार्थ पिलाकर भाई से कराया रेप

बरेली के नवाबगंज थाना क्षेत्र में दो नाबालिग मुस्लिम बहनों ने अपनी 10वीं कक्षा की हिन्दू सहेली को धोखे से घर ले जाकर नशीला पदार्थ खिलाया और अपने भाई अनस से उसका दुष्कर्म करवाया। वारदात के दौरान आरोपियों ने वीडियो बनाकर पीड़िता को ब्लैकमेल भी किया। पीड़िता के पिता उत्तराखण्ड में नौकरी करते हैं और वह अपनी माँ के साथ गाँव में रहती है। स्कूल के वार्षिकोत्सव के बाद सहेलियाँ उसे बहला-फुसलाकर अपने घर ले गयीं, जहाँ इस पूरी साजिश को अंजाम दिया गया।

माता-पिता ने भी किया सहयोग

पीड़ित छात्रा स्कूल के वार्षिक उत्सव कार्यक्रम में शामिल होने गयी थी। छुट्टी के बाद उसकी दो मुस्लिम सहेलियाँ उसे बहला फुसलाकर अपने साथ घर ले गयीं। वहाँ उसे खाने की चीज में नशीली दवाई दी गयी, जिससे वह बेहोश हो गयी। इसके बाद आरोपी भाई अनस ने उसके साथ रेप किया। हैरान करने वाली बात यह है कि इस पूरी प्लानिंग में सहेलियों के साथ उनके माता-पिता ने भी सहयोग किया। उन्होंने न सिर्फ घटना में मदद की, बल्कि वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर डालने की धमकी भी दी।

बेहोशी की हालत में छोड़कर भागे

जब छात्रा देर शाम तक घर नहीं लौटी, तो उसकी माँ ने तलाश करने लगे। ऐसे में घबराकर आरोपी सहेलियाँ और उनके

माता-पिता छात्रा को बेहोशी की हालत में उसके घर के बाहर छोड़कर फरार हो गये। होश में आने के बाद जब छात्रा ने अपनी माँ को आपबीती सुनायी, तो परिवार के पैरों तले जमीन खिसक गयी। इसके बाद उत्तराखण्ड से लौटे पिता ने तुरन्त नवाबगंज थाने पहुँचकर मामले की लिखित शिकायत दर्ज करायी।

सीओ नीलेश मिश्रा ने बताया कि 14 फरवरी, 2026 को मिली शिकायत के आधार पर आरोपी युवक अनस, उसकी दो नाबालिग बहनों और माता-पिता के खिलाफ अपहरण, दुष्कर्म और साजिश रचने की धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया है। पुलिस ने मुख्य आरोपी अनस को गिरफ्तार कर लिया है।

कानपुर : सहेली ने मांस खिला बनाया मतान्तरण का दबाव

कानपुर के कल्याणपुर निवासी महिला ने लखनऊ में रहने वाली अपनी सहेली को बकरीद में घर बुलाकर और धोखे से गोमांस खिलाकर मतान्तरण का दबाव बनाया। विरोध पर जेवर चोरी का झूठा आरोप लगाकर पुलिस बुला ली।

पीड़िता ने बताया कि आरोपित दम्पती अभी भी झूठी चोरी की शिकायत कर उसे परेशान कर रहे है। पीड़िता ने आइजीआरएस पोर्टल के बाद मुख्यमंत्री को पत्र भेज कर शिकायत की है।

कल्याणपुर के आइआइटी नानकारी निवासी अनीता गोस्वामी ने बताया कि उसकी बचपन की सहेली की शादी गोरखपुर में हुई थी। कुछ दिनों बाद ससुरालीजन से उसके सम्बन्ध खराब हुए तो उन्होंने पीड़िता को अपने घर में रखा था। वर्तमान में वह लखनऊ ठाकुरगंज में रहती है। अनीता का कहना है कि 26 मई को उसने काल करके बकरीद पर घर बुलाया। जिसके बाद 28 मई को अनीता बेटे व भतीजे के साथ लखनऊ स्थित उसके घर गयी। रात में खाने के दौरान सहेली के पति ने अनीता से कहा कि वह अपने पति को छोड़ दे, वह विदेश में अच्छा कमाने वाले अपने मुस्लिम दोस्त से उसका निकाह करा देगा। इस पर उसने मना कर दिया। दम्पती ने रात में खाने में उसे गोमांस से बनी बिरयानी खिला दी जो अजीब लगी। पीड़िता के पूछने पर बताया कि वह गोमांस से बनी है। जिसके बाद उसे उल्टियाँ होने लगी अनीता के नाराज होने पर आरोपित दम्पती ने अपने धर्म की विशेषता बताते हुए एक मौलाना को बुला लिया। मौलाना ने उसे कुरान की आयतें पढ़ने को कहा तो पीड़िता ने इन्कार कर दिया। जिसके बाद आरोपितों ने उसे जबरन पानी पिला दिया और कहा कि इसमें आकर वह महफूज रहेगी। जिसके बाद पीड़िता को चक्कर आने लगे तब वह सुबह घर जाने की बात बोलकर कमरे में चली गयी। पीड़िता बोली- ब्लैकमेल कर रहे थे व हिन्दू से मुस्लिम बनाकर निकाह करना चाहता था।

नशीला पदार्थ पिलाकर पत्नी के सामने किया रेप, किया ब्लैकमेल

बिहार के कैमूर जिले में पति ने पत्नी के सामने एक हिन्दू युवती के साथ मुस्लिम ने रेप किया। इस दौरान पत्नी वीडियो बनाती रही। वीडियो बनाने के बाद दोनों पति-पत्नी ने मिलकर पीड़िता ब्लैकमेल करना शुरू कर दिया।

पीड़िता ने बताया कि वीडियो वायरल करने की धमकी देकर आरोपी इकराम अंसारी(35) उससे शादी करना चाहता था। इस पूरी साजिश में उसकी पत्नी शाहिदा बेगम(26) भी शामिल थी। मामला 4 जून का है। पीड़िता ने 9 जून को थाने में शिकायत दर्ज करायी। पुलिस ने दोनों पति-पत्नी को गिरफ्तार कर लिया है। घटना रामगढ़ थाना इलाके के एक गाँव की है। पीड़िता, इकराम अंसारी और शाहिदा बेगम की पड़ोसी है। उसका कहना है कि शाहिदा की तबीयत ठीक नहीं रहती है। घर के काम में हाथ बंटाने को लेकर वो शाहिदा के घर अक्सर जाया करती थी। शादी के बाद दोनों के बच्चे भी नहीं हो रहे थे। बीमारी और बच्चे नहीं होने के लेकर दोनों परेशान रहते थे। साल 2025 में इकराम अंसारी और शाहिदा बेगम ने दिल्ली जाकर दिखाने का फैसला किया। पीड़िता ने बताया कि दोनों ने मुझसे कहा कि तुम साथ चलो। शाहिदा की हालत देखकर मैं उनके साथ जाने को तैयार हो गई। दिल्ली में डॉक्टर से दिखाने के बाद फिर से हम लोग कैमूर लौटे।

पीड़िता ने बताया कि 4 जून की शाम साजिदा ने उसे अपने घर बुलाया। घर पर उसका पति इकराम अंसारी भी मौजूद था। दोनों ने मुझे कोल्ड ड्रिंक पीने को दिया। कोल्ड ड्रिंक पीने के बाद उसे बेहोशी छाने लगी। इस दौरान शाहिदा और इकराम ने उसके कपड़े उतार दिये। इसके बाद इकराम ने जबरन मेरे साथ सम्बन्ध बनाया। इसके बाद दोनों आरोपी उक्त वीडियो दिखाकर पीड़िता को लगातार ब्लैकमेल करने लगे। उन्होंने धमकी दी कि वीडियो वायरल कर देंगे तो कहीं मुँह दिखाने लायक नहीं रहोगी। पीड़िता के मुताबिक इकराम को बच्चा नहीं हो रहा था। इसलिये वो ब्लैकमेल कर मुझसे जबरन शादी करना चाहता था। इसके बाद रोती-बिलखती पीड़िता अपने घर पहुँची और पूरी घटना की जानकारी अपने परिवार के सदस्यों को दी। परिवार के सदस्यों ने आरोपियों से पूछताछ करने और वीडियो डिलीट करने के लिये कहा गया लेकिन आरोपियों ने वीडियो डिटील नहीं किया। पीड़िता ने बताया कि वह उनकी शिकायत पुलिस से न कर दे इसलिए आरोपितों ने अगले दिन सुबह साजिशन उस पर घर से जेवर चोरी के आरोप लगाकर पुलिस बुला ली।

धोखे से बुलाकर चीर दिया पेट

राजस्थान के झुंझुनूं जिले में रिटायर्ड फौजी उदयवीर सिंह चाहर (50) के मुस्लिम दोस्त ने धोखे से बाहर बुलाकर चाकू से ताबड़तोड़ वार कर हत्या कर दी। मृतक फौजी की बेटी अनमोल ने बताया कि 29 मार्च उनकी जिन्दगी का सबसे खौफनाक दिन था। रात करीब 8:30 बजे गाँव के ही युवक अकरम ने उसके पिता को धोखे से बाहर बुलाया और उन पर चाकू से हमला कर दिया। बेटी का आरोप है कि आरोपी ने इतनी बेरहमी दिखायी कि चाकू से पूरा पेट चीर दिया। अनमोल ने कहा, 'पापा कह कर गये थे कि आधा घन्टे में लौट आऊँगा', लेकिन जब लौटे तो कफन में लिपटे हुए थे। उनके आखिरी शब्द थे 'मुझे बचा लो', लेकिन हम उन्हें नहीं बचा पाये।●

जब सत्ता बनी तानाशाह और संघ बना लोकतंत्र का प्रहरी

25 जून 1975... भारतीय लोकतंत्र के इतिहास की वह काली रात, जब सत्ता ने संविधान को बन्धक बना लिया, नागरिक अधिकारों को कुचल दिया और पूरे राष्ट्र को भय के कारागार में धकेल दिया। यह केवल आपातकाल नहीं था। यह लोकतंत्र की हत्या का सुनियोजित प्रयास था।

यह वह दौर था, जब सत्ता ने स्वयं को राष्ट्र से बड़ा मान लिया था। जब सरकार को लगा कि जनमत से नहीं, दमन से शासन चलाया जा सकता है। जब संविधान की आत्मा पर अहंकार का पहरा बैठा दिया गया था। अखबारों की स्याही पर सेंसर का ताला लगा दिया गया। न्याय की आवाज़ को मौन करने का प्रयास हुआ। विपक्षी नेताओं को आधी रात में गिरफ्तार कर लिया गया और पूरे देश को यह संदेश दिया गया कि अब केवल वही सत्य है, जिसे सत्ता सत्य घोषित करे।

भारतीय लोकतंत्र ने इससे पहले ऐसा अन्धकार कभी नहीं देखा था लेकिन हर अन्धेरे की एक सीमा होती है। उस अन्धेरे के विरुद्ध सबसे सशक्त प्रतिरोध का नाम था...राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ।

तत्कालीन सत्ता जानती थी कि यदि कोई संगठन राष्ट्रव्यापी स्तर पर लोकतंत्र की चेतना को जीवित रख सकता है, तो वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ है इसलिये आपातकाल लागू होते ही संघ पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। हजारों स्वयंसेवकों को गिरफ्तार कर जेलों में ठूँस दिया गया। शाखाएँ बन्द कर दी गयीं। कार्यालय सील कर दिये गये। कार्यकर्ताओं की निगरानी शुरू हो गयीं लेकिन तानाशाही की सबसे बड़ी भूल यही थी कि उसने संघ को केवल एक संगठन समझा।

वह यह नहीं समझ सकी कि संघ कोई भवन नहीं, कोई कार्यालय नहीं, कोई कागजी संरचना नहीं है। संघ एक विचार है और विचारों पर ताले नहीं लगते। यहीं से शुरू हुआ लोकतंत्र रक्षा का वह महाअभियान, जिसे भारतीय इतिहास कभी भुला नहीं सकता।

उस समय एक कानून 'मीसा' (मेंटेनेंस ऑफ इंटरनल सिक्योरिटी एक्ट) पूरे देश में आतंक का पर्याय बन गया था। नाम सुरक्षा का था, लेकिन उसका प्रयोग दमन के लिये हो रहा था। मीसा के तहत किसी भी व्यक्ति को बिना मुकदमा चलाये, बिना आरोप सिद्ध किये और बिना न्यायिक संरक्षण के जेल में डाला जा सकता था।

हजारों राष्ट्रभक्तों को इसी कानून के तहत कैद किया गया। उनका अपराध क्या था? क्या उन्होंने देश के साथ विश्वासघात किया था? क्या उन्होंने हिंसा की थी? क्या उन्होंने संविधान को चुनौती दी थी? नहीं। उनका अपराध केवल इतना था कि वे लोकतंत्र के पक्ष में खड़े थे। वे स्वतंत्रता के पक्ष में खड़े थे। वे भारत की आत्मा के पक्ष में खड़े थे।

मीसा के अन्तर्गत बन्द किये गये हजारों स्वयंसेवकों और लोकतंत्र सेनानियों ने केवल कारावास ही नहीं झेला, बल्कि अमानवीय यातनाओं का भी सामना किया। उन्हें संकुचित और अस्वास्थ्यकर बैरकों में रखा गया। घण्टों खड़े रहने के लिये विवश किया गया। मानसिक उत्पीड़न किया गया। निरन्तर दबाव बनाया गया कि वे अपने विचारों और लोकतंत्र समर्थक संघर्ष का त्याग कर दें।

अनेक स्वयंसेवकों को बार-बार जेलों में स्थानान्तरित किया गया। सामान्य अपराधियों के साथ रखा गया। मूलभूत सुविधाओं से वंचित रखा गया। वृद्ध कार्यकर्ताओं, विद्यार्थियों और सामाजिक कार्यकर्ताओं तक को नहीं बख्शा गया। परिवारों से मुलाकातों पर प्रतिबन्ध लगाये गये। आर्थिक कठिनाइयों में झोंका गया। परिजनों को प्रशासनिक प्रताड़ना तक झेलनी पड़ी।

उस दौर में देश के अनेक घरों में माताएँ अपने पुत्रों के जेल जाने पर रोती भी थीं और गर्व भी करती थीं। अनेक पत्नियों को महीनों यह नहीं मालूम होता था कि उनके पति किस जेल में हैं। अनेक बच्चों ने अपने पिता को सलाखों के पीछे देखा लेकिन लोकतंत्र की रक्षा का संकल्प इतना प्रबल था कि परिवारों ने भी व्यक्तिगत पीड़ा से ऊपर उठकर इस संघर्ष को स्वीकार किया लेकिन यातनाओं की पराकाष्ठा भी उनके संकल्प को तोड़ नहीं सकी। सत्ता यह मानकर चल रही थी कि जेल की सलाखें विचारों को कैद कर लेंगी, किन्तु हुआ इसका ठीक उलटा। जितना दमन बढ़ा, उतना ही लोकतंत्र बचाने का संकल्प प्रबल होता गया। जिन कोठरियों में भय पैदा करने का प्रयास किया गया था, वे लोकतंत्र रक्षा के तपोस्थल बन गयीं।

संघ के वरिष्ठ प्रचारक श्री रामजी भाई उस कालखण्ड को स्मरण करते हुए बताते हैं कि जेलों के बाहर प्रतीक्षा करती माताओं की आँखें और भीतर बन्द स्वयंसेवकों का अटूट साहस आज भी उनकी स्मृतियों में ताजा है। वे कहते हैं कि 'अनेक कार्यकर्ताओं को यह तक नहीं मालूम होता था कि रिहाई कब होगी, लेकिन किसी के चेहरे पर भय नहीं दिखता था। सबके मन में एक ही विश्वास था कि लोकतंत्र बचेगा और भारत फिर स्वतंत्र होकर साँस लेगा।'

संघ के वरिष्ठ प्रचारक श्री वीरेन्द्र जी उस कालखण्ड की स्मृति साझा करते हुए कहते हैं कि आपातकाल में अपराध और

असहमति के बीच की रेखा लगभग मिटा दी गयी थी। सरकार की नीतियों पर प्रश्न उठाना ही सन्देह का कारण बन जाता था। आधी रात को घरों के दरवाजे खटखटाये जाते थे, बिना कारण लोगों को उठा लिया जाता था और परिवारों पर निरन्तर दबाव बनाया जाता था। सत्ता ही सत्य बन गयी थी और सरकार स्वयं को संविधान, न्याय और जनमत से भी ऊपर समझने लगी थी।

देशभर में हजारों स्वयंसेवक 'मीसाबन्दी' बनकर जेलों में पहुँचे। हजारों प्रचारक भूमिगत हो गये। गुप्त साहित्य छापा गया। सन्देश पहुँचाये गये। जनजागरण किया गया। लोकतंत्र की मशाल को बुझने से बचाया गया।

उस समय संघर्ष केवल सड़कों पर नहीं, विचारों के स्तर पर भी चल रहा था। सत्ता समाचारों पर पहरा बिठा सकती थी, लेकिन सत्य पर नहीं। जेलों की दीवारें स्वयंसेवकों को कैद कर सकती थीं, लेकिन उनके संकल्प को नहीं। यही कारण था कि जिस लोकतंत्र को सत्ता दमन के बल पर पराजित मान बैठी थी, उसकी धड़कनें देश के गाँवों, कस्बों, कारागारों और भूमिगत आन्दोलनों में जीवित रहीं।

उसने जेल स्वीकार की, लेकिन आत्मसमर्पण नहीं किया। उसने यातनाएँ स्वीकार कीं, लेकिन विचार नहीं छोड़ा। उसने कष्ट स्वीकार किये, लेकिन राष्ट्र के लोकतांत्रिक भविष्य के साथ समझौता नहीं किया।

इतिहास के निष्पक्ष अध्ययन से यह तथ्य स्पष्ट होता है कि यदि उस कालखण्ड में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का राष्ट्रव्यापी संगठन, उसका अनुशासित कार्यकर्ता तंत्र और उसके स्वयंसेवकों का अदम्य साहस लोकतंत्र रक्षा के लिये खड़ा न होता, तो आपातकाल विरोधी आन्दोलन की ऊर्जा, विस्तार और निरन्तरता वैसी नहीं रह

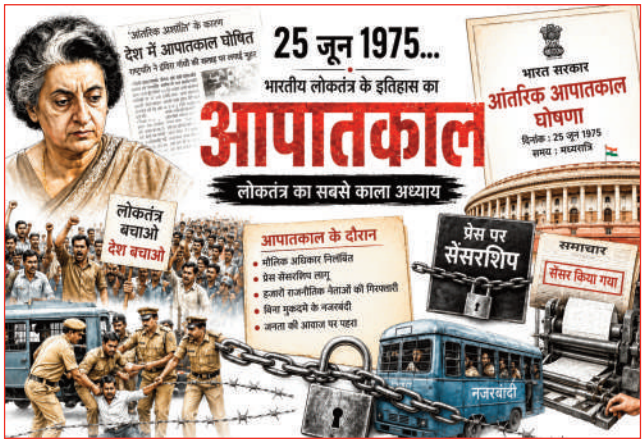

पाती। संघ उस संघर्ष का केवल सहभागी नहीं था, बल्कि उसकी सबसे सुदृढ़ आधारशिलाओं में से एक था।

लोकनायक जयप्रकाश नारायण स्वयं संघ के अनुशासन, संगठन क्षमता और लोकतंत्र रक्षा में उसके योगदान की खुले मंचों से सराहना कर चुके थे क्योंकि उन्होंने देखा था कि जब अधिकांश लोग भयभीत थे, तब संघ के स्वयंसेवक संघर्षरत थे। जब अनेक लोग चुप थे, तब संघ बोल रहा था। जब अनेक लोग सुरक्षित दूरी बनाये हुए थे, तब संघ का कार्यकर्ता जेल की कोठरी में बैठा लोकतंत्र की रक्षा का संकल्प दोहरा रहा था।

संघ के वरिष्ठ प्रचारकों और लोकतंत्र सेनानियों के संस्मरण बताते हैं कि कारागार उनके लिये निराशा के केन्द्र नहीं, बल्कि राष्ट्रचिन्तन के केन्द्र बन गये थे। अनेक स्वयंसेवक कहा करते थे कि 'जेल में हमारा शरीर बन्द था, विचार नहीं।' यही कारण था कि दमन बढ़ता गया, लेकिन प्रतिरोध भी उतना ही मजबूत होता गया।

आज स्वतंत्रता और लोकतंत्र की बातें करना आसान है। आज सोशल मीडिया पर विचार व्यक्त करना आसान है। आज सरकारों की आलोचना करना आसान है। लेकिन यह अधिकार हमें सहज रूप से नहीं मिले हैं। इनके पीछे हजारों मीसाबन्दियों का तप है। हजारों सत्याग्रहियों का त्याग है। हजारों स्वयंसेवकों की कारावास-यात्रा है। हजारों परिवारों के आँसू हैं।

आपातकाल केवल एक ऐतिहासिक घटना नहीं है। यह सत्ता के अहंकार के विरुद्ध राष्ट्र की चेतावनी है। यह लोकतंत्र की रक्षा के लिये दिये गए बलिदानों का स्मारक है। यह उन हजारों मीसाबन्दियों, सत्याग्रहियों और स्वयंसेवकों का ऋण स्मरण है, जिन्होंने कारागारों की काल कोठरियों में भी स्वतंत्र भारत का स्वप्न जीवित रखा। इतिहास गवाह है कि सत्ता का दमन क्षणिक होता है, लेकिन राष्ट्र की चेतना शाश्वत होती है। 1975 के अन्धकारमय दौर में उस चेतना का सबसे संगठित, सबसे अनुशासित और सबसे साहसी स्वर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ था इसलिये आपातकाल का इतिहास केवल तानाशाही की कहानी नहीं, बल्कि लोकतंत्र की विजयगाथा भी है। लोकतंत्र अन्ततः जीतता है क्योंकि उसके पीछे संविधान से पहले समाज खड़ा होता है। और जब-जब लोकतंत्र पर संकट आयेगा, तब-तब भारत की राष्ट्रचेतना उसे बचाने के लिये खड़ी होगी। ●

कार्य के प्रति समर्पण सर्वोपरि

एक बार नागपुर में डॉ. हेडगेवार गम्भीर रूप से अस्वस्थ थे। चिकित्सकों ने उन्हें पूर्ण विश्राम की सलाह दी थी। उसी समय संघ का एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम और कुछ कार्यकर्ताओं की बैठक निर्धारित थी। आसपास के लोगों ने आग्रह किया कि वे स्वास्थ्य को प्राथमिकता दें और कार्यक्रम स्थगित कर दें।

किन्तु डॉ. हेडगेवार ने शान्त स्वर में कहा-

"यदि मैं ही कठिन समय में रुक जाऊँ, तो कार्यकर्ताओं को त्याग और अनुशासन का संस्कार कैसे मिलेगा?"

कमज़ोर स्वास्थ्य के बावजूद वे कार्यक्रम में पहुँचे। वहाँ उन्होंने कोई लम्बा भाषण नहीं दिया, केवल कार्यकर्ताओं के बीच बैठकर उनका उत्साह बढ़ाया। उपस्थित स्वयंसेवकों पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने देखा कि नेतृत्व केवल निर्देश देने का नाम नहीं, बल्कि स्वयं उदाहरण बनकर खड़े होने का नाम है। सच्चा नेतृत्व सुविधा में नहीं, बल्कि कठिन परिस्थितियों में अपने दायित्व का निर्वहन करने से प्रकट होता है। ●

कबीर-वाणी में सनातन सांस्कृतिक बोध

भारतीय सन्त परम्परा में कबीर का व्यक्तित्व अद्वितीय है। वे केवल एक सन्त कवि या समाज सुधारक नहीं, बल्कि भारतीय अथवा सनातन सांस्कृतिक चेतना के ऐसे व्याख्याकार हैं जिन्होंने जीवन, धर्म, अध्यात्म और मानव अस्तित्व को अत्यन्त गहनता से देखा। यद्यपि कबीर ने धार्मिक आडम्बरों, रूढ़ियों और बाह्याचारों का प्रखर विरोध किया, तथापि उनकी समस्त वैचारिक संरचना भारतीय अथवा सनातन संस्कृति की दार्शनिक भूमि पर ही प्रतिष्ठित दिखायी देती है। उनकी लेखनी में उपनिषदों का अद्वैत भाव, वेदान्त की ब्रह्म चेतना, भक्ति परम्परा का प्रेम, योग दर्शन का आत्मानुभव, गुरु-शिष्य परम्परा का गौरव तथा लोकमंगल की भारतीय अवधारणा अत्यन्त सुदृढ़ रूप से प्रतिबिम्बित होती है।

कबीर की वाणी का केन्द्रीय तत्व 'परम तत्व' की खोज है, जो भारतीय दार्शनिक परम्परा का मूलाधार है। उपनिषदों में वर्णित-

"एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति"

(ऋग्वेद- 1.164.46)

अर्थात सत्य एक है, ज्ञानी उसे अनेक रूपों में व्यक्त करते हैं , इस भाव की प्रतिध्वनि कबीर के चिन्तन में स्पष्ट दिखायी देती है। वे 'राम' को किसी सीमित देवता या अवतार के रूप में नहीं, बल्कि सार्वभौमिक चेतना और निर्गुण ब्रह्म के प्रतीक रूप में ग्रहण करते हैं:

"दशरथ सुत तिहुँ लोक बखाना,
राम नाम का मरम न जाना॥"

यहाँ कबीर 'राम' के लौकिक स्वरूप से आगे बढ़कर उस शाश्वत ब्रह्म की ओर संकेत करते हैं जो सनातन चिन्तन की आत्मा है। यह दृष्टिकोण वेदान्त दर्शन की "अहं ब्रह्मास्मि" तथा "तत्त्वमसि" जैसी अवधारणाओं के निकट प्रतीत होता है।

कबीर की लेखनी में 'माया' की अवधारणा अत्यन्त गूढ़ दार्शनिक स्वरूप में उपस्थित है। भारतीय दर्शन में माया को वह शक्ति माना गया है जो मनुष्य को सत्य से दूर रखती है। कबीर इसे केवल दार्शनिक विमर्श तक सीमित नहीं रखते, बल्कि जीवनानुभव के स्तर पर व्यक्त करते हैं:

"माया महाठगिनी हम जानी,
त्रिगुण फाँस लिये कर डोले,
बोले मधुरी बानी॥"

यहाँ 'त्रिगुण'- सत्त्व, रज और तम का उल्लेख स्पष्ट रूप से भारतीय सांख्य और वेदान्त परम्परा की स्मृति जगाता है। कबीर का यह चिन्तन दर्शाता है कि वे भारतीय दार्शनिक परम्परा के सूक्ष्म तत्वों से गहरे रूप में परिचित थे।

सनातन संस्कृति में 'गुरु' को ज्ञान और मोक्ष का सेतु माना गया है। कबीर की दृष्टि में गुरु केवल शिक्षक नहीं, बल्कि आत्मिक जागरण का माध्यम हैं-

"गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूँ पाय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविन्द दियो बताय॥"

यह दोहा भारतीय गुरु-शिष्य परम्परा के सर्वोच्च आदर्श का उद्घोष है। उपनिषदों से लेकर भक्ति परम्परा तक गुरु को अज्ञान के अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाला माना गया है। कबीर इसी सनातन अवधारणा को लोकभाषा में प्रतिष्ठित करते हैं।

कबीर के चिन्तन में 'आत्मा' और 'परमात्मा' की एकता का भाव भी भारतीय आध्यात्मिकता का अत्यन्त प्रबल संकेत है। वे शरीर को नश्वर और आत्मा को शाश्वत मानते हैं :

"जल में कुम्भ, कुम्भ में जल है,
बाहर भीतर पानी।
फूटा कुम्भ जल जलहि समाना,
यह तत कह्यो ज्ञानी॥"

यहाँ आत्मा और ब्रह्म की अभिन्नता का विचार अद्वैत वेदान्त की प्रतिध्वनि है। जैसे घट के टूटने पर जल जल में मिल जाता है, वैसे ही जीवात्मा परमात्मा में लीन हो जाती है, यह सनातन संस्कृति की अत्यन्त गूढ़ आध्यात्मिक अवधारणा है।

कबीर के काव्य में योग और साधना की भारतीय परम्परा भी स्पष्ट रूप से विद्यमान है। वे बाह्याचार से अधिक अन्तर्मन की साधना पर बल देते हैं:

"मोको कहाँ ढूँढे रे बन्दे,
मैं तो तेरे पास में।
ना मैं मन्दिर, ना मैं मस्जिद,
ना काबे कैलास में॥"

यहाँ ईश्वर को बाहर नहीं, बल्कि आत्मा के भीतर खोजने का आग्रह उपनिषदों की "ईशावास्यमिदं सर्वम्" की भावना के अत्यन्त निकट है। यह भारतीय अध्यात्म की अन्तर्मुखी साधना का उत्कृष्ट उदाहरण है।

साथ ही, कबीर की लेखनी में लोकमंगल और नैतिकता की भारतीय अवधारणा भी गहरायी से जुड़ी है। वे सामाजिक विषमता, जातिगत अहंकार और पाखण्ड का विरोध करते हुए मनुष्य की आन्तरिक शुचिता को महत्त्व देते हैं :

"जाति न पूछो साधु की,
पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तरवार का,
पड़ा रहन दो म्यान॥"

यहाँ मनुष्य के मूल्यांकन का आधार जन्म नहीं, बल्कि ज्ञान और गुण को माना गया है, जो भारतीय संस्कृति के "वसुधैव कुटुम्बकम्" तथा समत्व के आदर्श से जुड़ता है।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि कबीर का विरोध परम्परा-विरोध नहीं, बल्कि परम्परा के विकृत रूपों का प्रतिरोध है। वे मूर्तिपूजा, कर्मकाण्ड और धार्मिक पाखण्ड पर प्रश्न उठाते हैं:

"पाहन पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूँ पहार।"

किन्तु इसका आशय आध्यात्मिकता का निषेध नहीं, बल्कि सत्य की ओर लौटने का आग्रह है। यह भारतीय संस्कृति के उस आत्मसुधारवादी स्वभाव को ही व्यक्त करता है जिसमें समय-समय पर सन्तों और मनीषियों ने मूल तत्व की पुनर्स्थापना का कार्य किया।

यह निर्विवाद रूप से देखा जा सकता है कि कबीर की लेखनी में भारतीय अथवा सनातन संस्कृति का केवल सामान्य नहीं, बल्कि अत्यन्त सशक्त, गूढ़ और दार्शनिक प्रतिबिम्ब उपस्थित है। उनकी वाणी में वेदान्त का ब्रह्म, उपनिषदों का आत्मबोध, योग का अन्तर्मंथन, भक्ति का प्रेम, गुरु परम्परा का आदर्श और लोकजीवन का सहज बोध एक साथ समाहित हैं इसीलिये कबीर किसी एक सम्प्रदाय के कवि नहीं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक चेतना के सार्वकालिक प्रतिनिधि प्रतीत होते हैं। ●

(लेखक दिल्ली विवि के शोध छात्र हैं)

● अमन दुबे

"वे हमारे अपने हैं"

वैसे तो बालासाहेब देवरस का पूरा जीवन ही सभी के लिये प्रेरणा का केन्द्र है पर ये दो प्रसंग उनके अद्भुत संगठन कौशल और मानवीयता का प्रतीक है-

पहला प्रसंग : 1993 में चेन्नई के आरएसएस कार्यालय में बम विस्फोट हुआ, जिसमें कई स्वयंसेवकों की मृत्यु हो गयी। उस समय बालासाहेब देवरस का स्वास्थ्य बेहद खराब था। चलना-फिरना कठिन हो चुका था, शरीर लकवे से प्रभावित था, डॉक्टरों ने यात्रा लगभग असम्भव बता दी थी। लेकिन जैसे ही उन्हें यह समाचार मिला, उन्होंने सबसे पहले पूछा- "परिवारों की क्या स्थिति है?" और वहाँ जाने की इच्छा व्यक्त की।

साथियों ने कहा कि आपकी तबीयत यात्रा की अनुमति नहीं देती। उन्होंने शान्त स्वर में जवाब दिया- "वे हमारे अपने हैं, ऐसे समय में मैं कैसे न जाऊँ?"

काफी मनाने के बाद भी वे नहीं माने। अन्ततः जोखिम के बावजूद वे चेन्नई पहुँचे। वहाँ वे किसी औपचारिक नेता की तरह नहीं, बल्कि परिवार के एक बड़े सदस्य की तरह शोकग्रस्त परिवारों के बीच बैठे। कहते हैं, एक माँ ने उनका हाथ पकड़कर कहा- "इतनी बीमारी में भी आप हमारे घर आये अब लगता है कि हम अकेले नहीं हैं।" इस प्रसंग में रोचकता किसी नाटकीय घटना में नहीं, बल्कि उस भाव में है, एक ऐसा व्यक्ति, जो शारीरिक रूप से लगभग असहाय अवस्था में भी अपने कार्यकर्ताओं के दुःख में उपस्थित होना अपना कर्तव्य मानता है। शायद यही कारण है कि संघ के भीतर लोग उन्हें केवल एक सरसंघचालक नहीं, बल्कि आत्मीय संरक्षक के रूप में भी याद करते हैं।

दूसरा प्रसंग : बालासाहेब देवरस के व्यक्तित्व की सबसे विशिष्ट बातों में से एक थी- कार्यकर्ताओं के प्रति गहरा अपनत्व। वे संगठन को केवल विचार या अनुशासन से नहीं, बल्कि सम्बन्धों से चलने वाली व्यवस्था मानते थे। इसका एक रोचक प्रसंग अक्सर सुनाया जाता है।

एक बार नागपुर में एक वरिष्ठ स्वयंसेवक, जो लम्बे समय से संघ कार्य में सक्रिय थे, किसी बात पर बहुत कठोर और चिड़चिड़े स्वभाव के हो गये थे। बातचीत के दौरान उन्होंने आधे मज़ाक, आधे आत्मसमर्पण के भाव में कहा- "अब इस उम्र में स्वभाव क्या बदलेगा? जैसा हूँ, वैसा ही रहूँगा।"

बालासाहेब ने मुस्कुराते हुए उनकी ओर देखा। बात को उपदेश जैसा भारी न बनाते हुए, बहुत सहज ढंग से अंग्रेज़ी में कहा- "You should mend till you end." (अंतिम क्षण तक स्वयं को सुधारते रहना चाहिए।) कमरे में हल्की हँसी गूँजी, लेकिन सन्देश गहरा था। यह केवल एक वाक्य नहीं था; बालासाहेब का जीवन-दर्शन था- कि व्यक्ति चाहे कितना भी वरिष्ठ क्यों न हो, सीखने, बदलने और व्यवहार को बेहतर करने की प्रक्रिया कभी समाप्त नहीं होनी चाहिये।

इसी अपनत्व का एक और पक्ष यह था कि वे कार्यकर्ताओं के व्यक्तिगत जीवन की छोटी-छोटी बातों का भी ध्यान रखते थे। यदि कोई स्वयंसेवक कई दिनों तक दिखायी न दे, तो वे पूछ लेते- "वह आजकल आ क्यों नहीं रहा? घर में सब ठीक है न?" उनके लिये कार्यकर्ता "कैडर" नहीं, अपने लोग थे।

कई लोग याद करते हैं कि उनसे मिलने पर औपचारिकता कम और घर के बड़े सदस्य जैसा स्नेह अधिक महसूस होता था। ●

जब दीक्षांत मंच पर गूँजी मातृभाषा

विश्वविद्यालय में साथियों के साथ डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी

1934 में मात्र 33 वर्ष की आयु में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी को कलकत्ता विश्वविद्यालय का कुलपति नियुक्त किया गया। यह नियुक्ति अपने समय में केवल एक प्रशासनिक दायित्व नहीं थी, बल्कि औपनिवेशिक भारत की शिक्षा-व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण मोड़ के रूप में देखी गयी। उस दौर में उच्च शिक्षा, अकादमिक प्रतिष्ठा और बौद्धिक गम्भीरता को लगभग पूर्णतः अंग्रेज़ी भाषा से जोड़ा जाता था। भारतीय भाषाएँ विश्वविद्यालयों और औपचारिक शैक्षणिक मंचों पर सीमित भूमिका में थीं।

श्यामा प्रसाद मुखर्जी का दृष्टिकोण इससे अलग था। उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल विदेशी ज्ञान को अपनाना नहीं, बल्कि अपनी सांस्कृतिक जड़ों के साथ आत्मविश्वासपूर्वक आगे बढ़ना भी है। उन्होंने विश्वविद्यालय में भारतीय भाषाओं, विशेषकर बांग्ला, को अधिक सम्मान और स्थान दिलाने के प्रयास किये। वे इस विचार के समर्थक थे कि मातृभाषा में भी उच्च स्तरीय अध्ययन, शोध और बौद्धिक विमर्श पूरी गरिमा के साथ सम्भव है।

इसी काल में एक महत्वपूर्ण घटना घटी, जब रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कलकत्ता विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में बांग्ला भाषा में सम्बोधन दिया। उस समय औपचारिक अकादमिक मंचों पर अंग्रेज़ी को ही "मानक" और "प्रतिष्ठित" भाषा माना जाता था, इसलिये यह घटना केवल भाषाई परिवर्तन नहीं थी, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक आत्मगौरव और बौद्धिक स्वाभिमान का प्रतीक बन गयी। इसने यह स्थापित किया कि भारतीय भाषाएँ केवल भावनात्मक या साहित्यिक अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं हैं, बल्कि उच्च शिक्षा और गम्भीर विचार-विमर्श की भी सशक्त माध्यम हैं।

यह पूरा प्रसंग श्यामा प्रसाद मुखर्जी के व्यक्तित्व के उस पक्ष को उजागर करता है जिसमें वे केवल एक राजनेता नहीं, बल्कि शिक्षा और संस्कृति के दूरदर्शी संरक्षक के रूप में सामने आते हैं। उन्होंने आधुनिकता और भारतीयता के बीच सन्तुलन स्थापित करने का प्रयास किया और शिक्षा को औपनिवेशिक मानसिकता से निकालकर आत्मसम्मान और सांस्कृतिक चेतना की दिशा में ले जाने का मार्ग प्रशस्त किया। ●

राष्ट्रनायक राजा दाहिर सेन

वीर महाप्रतापी नायक थराजा दाहिर सेन आठवीं सदी के भारत उन महानायकों में हैं जिन्होंने क्रूर मुस्लिम आक्रान्ताओं को घुटने टेकने के लिए मजबूर कर दिया था। उनकी दो बहादुर बेटियों ने हमलावरों के घर में घुसकर विलक्षण बुद्धिमत्ता और वीरता से आक्रान्ता को मौत के घाट उतारकर अपने प्रतापी पिता की हत्या का बदला लिया था। परम प्रतापी राजा दाहिर सेन ने 679 ईसवी में सिन्ध की राजसत्ता सम्भाली। राजा दाहिर सेन के समक्ष शासन की अनेक चुनौतियाँ थीं जिनको उन्होंने बखूबी सम्भाला साथ ही इस्लामी हमलावरों का सामना भी किया। राजा दाहिर सेन के समय इस्लामी हमलावरों ने सिन्ध पर 15 बार आक्रमण किया और 14 बार घुटने टेकने पर मजबूर हुए। राजा दाहिर सेन ने लगभग 33 वर्षो तक इस्लामी सेना से लगातार युद्ध किया तथा ऐसे ही एक युद्ध क्षेत्र में वीरगति प्राप्त की। उनकी मृत्यु के उपरान्त ही इस्लामी फौज सिन्ध पर कब्जा कर सकी।

उस समय सिन्ध राज्य समुद्री मार्ग द्वारा पूरे विश्व के साथ व्यापार करता था। सिन्ध का देवल बन्दरगाह व्यापार का मुख्य केन्द्र था। ईराक-ईरान से आने वाले जहाज इसी बन्दरगाह से होते हुए दूरदराज के देशों को जाया करते थे। भारतीय वयापारियों के उच्च कोटि के रहन-सहन को देखकर अरब देशों के लोग हिन्दू साम्राज्य की ओर आकर्षित हुए। अरब के लोग साम्राज्य के साथ-साथ इस्लाम का भी प्रचार करते थे और कट्टरता तथा क्रूरता के साथ लोगों को अपने मजहब में शामिल करते थे।

सन 712 ईसवी में अरब शासक अल हज्जाज ने अपने दामाद एवं सेनापति मोहम्मद बिन कासिम को सिन्ध पर आक्रमण करने के लिये भेजा। कासिम की सेना समुद्री मार्ग से मकरान के रास्ते बढ़ते हुए देवल बन्दरगाह पहुँची। कासिम जानता था कि सिन्ध को सीधी लड़ायी से नहीं जीता जा सकता इसलिये उसने पीछे से वार करते हुए उस सदी का सबसे बड़ा नरसंहार और महिलाओं पर क्रूर अत्याचार आरम्भ किया। उसने जल्द ही नेरून दुर्ग पर कब्जा कर लिया तथा हैदरपुर के राज्यपाल मोक्षवास जो बौद्ध धर्म को मानता था, को धोखे से अपनी ओर मिला लिया। इससे प्रेरित होकर देवल के राज ज्ञानबुद्ध ने भी अरबी सेना को अपने यहाँ खाने-पीने और रहने को जगह दे दी। अब कासिम ने हैदरबाद सिन्ध के नीरनकोट पर हमला कर दिया। नीरनकोट को जीतने के बाद अरबी सेना ने रावनगर को अपने अधीन कर लिया।

झुकने नहीं दिया सिन्ध

एक बार देवल बन्दरगाह के निकट कुछ समुद्री डाकुओं ने अरब के एक जहाज को लूट लिया। जहाज का खलीफा उमर अरब गर्वनर अल हज्जाज राजा दाहिर सेन से मुआवजा माँगने आ गया। दाहिर सेन ने मुआवजा देने से मना कर दिया और कहा कि समुद्री डाकुओं पर उनका कोई दबाव नहीं है। इससे अल खलीफा तिलमिला उठा और वापस जाकर लामबन्दी करी इसके बाद से सिन्ध पर एक के बाद एक लगातार आक्रमण होने लगे किन्तु राजा दाहिर सेन जैसे वीर के रहते सिन्ध को झुकाना इतना आसान नहीं था। सन 711 ईसवी तक महाराज दाहिर सेन के 35 वर्ष के शासनकाल में अरबों ने 14 आक्रमण किये पर हर बार मुँह की खायी।

अन्त में कासिम का मुकाबला शूरवीर राजा दाहिर सेन के साथ हुआ। यह भयानक युद्ध नौ दिनों तक चला जिसमें आम नागरिकों ने भी कासिम की सेना से जमकर लोहा लिया। दाहिर सेन की सेना अरबों का सफाया कर आगे बढ़ती रही। अरब सेना पराजय की ओर बढ़ चली थी। शताब्दियों से चले आ रहे युद्ध के नियमों के अनुसार सूर्यास्त के बाद युद्ध नहीं होते थे, इसी नियम का पालन करते हुए दाहिर सेन की सेना रात में सो रही थी। युद्ध के नियमों का उल्लन्घन करते हुए धोखेबाज कासिम की सेना ने सोती हुई दाहिर सेना पर हमला कर दिया। इस हमले में गद्दार राजा मोक्षवास और उसकी सेना ने भी कासिम की सहायता की फिर भी यह युद्ध 21 दिनों तक चलता रहा और मोक्षवास की सहायता के बावजूद अरबी सेना युद्ध हार गयी। अब कासिम ने अत्यन्त नीच प्रवृत्ति से छल का प्रयोग करते हुए स्वयं महिला के रूप में दाहिर से मदद माँगी चूँकि राजा दाहिर प्रजा की हर सम्भव सहायता किया करते थे इसलिये वह कासिम के बिछाये जाल में फँस गये और अपनी सेना से काफी दूर चले आये। यहाँ अरबी सेना सें लड़ते-लड़ते वे हाथी से नीचे गिर पड़े। 20 जून 712 ईसवी के दिन राओर नाम के स्थान पर कासिम की सेना से लड़ते हुए राजा दाहिर सेन वीरगति को प्राप्त हुए।

इसके बाद कासिम की सेना सिन्ध में प्रवेश कर गयी। विधर्मियों के कुकृत्यों से परिचित महारानी लादी और किले की अन्य स्त्रियों ने अग्नि कुण्ड में कूदकर जौहर कर लिया। इस घटनाक्रम के दौरान दाहिर सेना की दोनों बेटियाँ पीछे रह गयीं। कासिम ने दोनों को बन्दी बना लिया और खलीफा हल अज्जाज को उपहार के रूप में अरब भेज दिया। खलीफा दोनों बहनों सूर्या एवं परीमल का सौन्दर्य देखकर उन पर मुग्ध हो गया किन्तु सूर्या और परीमल ने अद्भुत बुद्धिमत्ता का परिचय दिया। उन्होंने खलीफा को बताया कि वह दोनों अपवित्र हो चुकी हैं और इसका जिम्मेदार कासिम है। यह सुनकर खलीफा आगबबूला हो गया। उसने अपने सिपाहियों को आदेश दिया कि कासिम को बैल के चमड़े की बोरी में बन्द करके दश्मिक में उसके सामने लाया जाये। सिपाहियों ने ऐसा ही किया और रास्ते में ही बोरी में दम घुटने से कासिम की मौत हो गयी। इस प्रकार उन दोनों बेटियों ने अपने पिता राजा दाहिर सेन की हत्या का बदला ले लिया। कासिम की लाश देखने के बाद उन्होंने खलीफा के सामने "जय सिन्ध, जय सिन्ध, जय दाहिर" बोलते हुए एक दूसरे के सीने में खंजर घोंपकर प्राण त्याग दिये। यद्यपि "चाचनामा" नामक एक दस्तावेज में लिखा है कि कासिम की मौत के बाद खलीफा को जब सूर्या और परीमल के झूठ का पता चला तो उसने दोनों बहनों को जीवित ही दीवार में चुनवा दिया। इस प्रकार राजा दाहिर सेन तथा उनके परिवार ने राष्ट्र व सनातन धर्म की रक्षा के लिये सर्वस्व व सर्वोच्च बलिदान दिया। राजा दाहिर की कहानी भारत के जन-जन को जाननी चाहिये। ●

बीरबल साहनी पुराविज्ञान संस्थान ने खोजा सबसे पुराना वटवृक्ष

लखनऊ। बीरबल साहनी पुराविज्ञान संस्थान के विज्ञानी डॉ. त्रिना बोस और उनके शोध छात्र अवनीश मिश्रा ने बिहार के मुंगेर जिले में 700 वर्ष पुराना वट वृक्ष खोज निकाला है और इसे रेडियो कार्बन डेटिंग विधि से सिद्ध किया है। बिहार के मुंगेर जिले में बड़ा बंगला परिसर में यह वृक्ष लगा है।

विज्ञानी डॉ. त्रिना ने बताया कि बड़ा बंगला अपनी स्थापत्य शैली से ईस्ट इण्डिया कम्पनी की शुरुआत व मुगल काल के अन्तिम समय का बना प्रतीत होता है। उन्होंने बताया कि परिसर में लगा बरगद बड़ा बंगला की आयु का दोगुना यानी 700 वर्ष का है। यह वृक्ष उस समय के

प्राकृतिक वन का बचा हुआ प्रमाण हो सकता है। इस शोधपत्र के सहलेखक एवं बीरबल संस्थान पुराविज्ञान संस्थान के विज्ञानी डॉ. मयंक शेखर ने बताया कि बिहार के विभिन्न जिलों में प्राचीन एवं विरासत महत्व के अनेक वृक्ष मौजूद हो सकते हैं। जिनकी वैज्ञानिक आयु निर्धारण के लिये कार्बन डेटिंग आवश्यक है। ऐसे वृक्षों की सटीक आयु पता होने से न केवल उनके ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व को वैज्ञानिक आधार मिलेगा अपितु वन संरक्षण और जैविक विरासत के संरक्षण को भी नयी दिशा मिलेगी। शोध के सदस्य डॉ. अखिलेश कुमार यादव ने कहा कि ऐतिहासिक स्थलों मन्दिर परिसरों और प्राचीन बस्तियों में स्थित वृक्षों का वैज्ञानिक अध्ययन एवं डेटिंग विरासत संरक्षण को मजबूत आधार प्रदान कर सकती है। इन स्थलों की ऐतिहासिक प्रासंगिकता स्थापित होने से क्षेत्रीय पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा।

काशी में स्थापित होगा सबसे ऊँचा शिवलिंग, बनेगा शिवा थीम पार्क

वाराणसी। वाराणसी में एक नया शिवा थीम पार्क व सबसे ऊँचा शिवलिंग स्थपित करने की योजना पर कार्य प्रारम्भ हो चुका है। नगर निगम ने भेलूपुर स्थित जलकल परिसर को काशी इंटीग्रेटेड सेंटर व कम्युनिटी पार्क के रूप मे विकसित करने की योजना तैयार की है। इसमें देश का सबसे ऊँचा 130 फीट का शिवलिंग मुख्य आकर्षण होगा। यह सेंटर आधुनिकता और संस्कृति का अदभुत मेल होगा। इसे 104 करोड़ रुपये में चरण बद्ध तरीके से धरातल पर उतारा जायेगा।

शिवा थीम पार्क में 1000 मीटर लम्बा जागिंग ट्रैक, 300 मीटर का एलिवेटेड पाथ-वे और भव्य खुला म्यूजियम बनेगा। यहाँ स्थित हेरिटेज बिल्डिंग व तीन बड़े तालाब इसकी शोभा बढ़ायेंगे। एक मेगवाट का सोलर प्लान्ट इसे हरित ऊर्जा से आच्छादित करेगा। महापौर अशोक कुमार तिवारी ने बताया कि पार्क, काशी के पद्म पुरस्कारों से सम्मानित विभूतियों को समर्पित होगा। यहाँ भारत रत्न, पद्मभूषण व पद्मश्री से सम्मानित विभूतियों के जीवन परिचय, विचारों तथा योगदान की सजीव प्रस्तुति देखने को मिलेगी।

उम्मीद पोर्टल पर लखनऊ की 1124 वक्फ संपत्तियों का पंजीकरण निरस्त

लखनऊ। प्रदेश में वक्फ सम्पत्तियों को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर लाने के लिये शुरू किये गये उम्मीद पोर्टल पर सम्पत्तियों के पंजीकरण की समय सीमा समाप्त हो गयी है। इसके साथ ही दस्तावेजी और तकनीकी कमियों के चलते बड़ी संख्या में वक्फ सम्पत्तियों की अपलोडिंग और पंजीकरण निरस्त कर दिये गये हैं। प्रदेश के जिन जिलों में सबसे अधिक सम्पत्तियों का पंजीकरण रद्द हुआ है, उनमें जौनपुर, बाराबंकी और लखनऊ प्रमुख हैं।

लखनऊ में कुल 1124 वक्फ सम्पत्तियों का पंजीकरण निरस्त किया गया है। इनमें सुन्नी वक्फ बोर्ड की 972 और शिया वक्फ बोर्ड की 152 सम्पत्तियाँ शामिल हैं। सम्बन्धित अधिकारियों के अनुसार आवश्यक दस्तावेजों की कमी, रिकॉर्ड में विसंगतियाँ और अन्य तकनीकी कारणों के चलते इन सम्पत्तियों की अपलोडिंग को मँजूरी नहीं मिल सकी। प्रदेश स्तर पर देखें तो सुन्नी वक्फ बोर्ड की कुल 1,52,895 वक्फ सम्पत्तियाँ उम्मीद पोर्टल पर दर्ज की गयी हैं। हालांकि इनमें से 29,745 सम्पत्तियों की अपलोडिंग निरस्त कर दी गयी। वहीं शिया वक्फ बोर्ड की कुल 8,157 सम्पत्तियाँ पोर्टल पर दर्ज हुईं, जबकि 2,059 सम्पत्तियों का पंजीकरण रद्द कर दिया गया। अब निरस्त की गयी सम्पत्तियों के मामलों में सम्बन्धित दस्तावेजों की समीक्षा और आवश्यक सुधार के बाद आगे की कार्रवाई की जायेगी।

अब हनु देगा हर प्रश्न का जवाब

अयोध्या। श्रीराममन्दिर आने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा के लिये अब श्रीराम जन्मभूमि तीर्थक्षेत्र की वेबसाइट को एआई से जोड़ा गया है। वेबसाइट पर शुरू किया गया एआई असिस्टेंट हनु मन्दिर से जुड़ी सभी जरूरी जानकारियाँ कुछ ही सेकेण्ड में उपलब्ध करा रहा है। श्रद्धालु अयोध्या पहुँचने के मार्ग, रामलला के दर्शन का समय, मन्दिर परिसर की सुविधाएं, पार्किंग व्यवस्था और अन्य सेवाओं की जानकारी आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। हनु दिल्ली, लखनऊ, वाराणसी, प्रयागराज समेत विभिन्न शहरों से उपलब्ध रेल सेवाओं, ट्रेनों के नाम और यात्रा विकल्पों की जानकारी देता है।

प्रार्थना सभा की आड़ में धर्मांतरण, कई गिरफ्तार

सीतापुर। रामकोट क्षेत्र के रामनगर खटकरी गाँव में आयोजित एक प्रार्थना सभा में प्रलोभन देकर धर्मान्तरण कराने के आरोप में पुलिस ने लखीमपुर खीरी निवासी मंजीत तथा रामनगर खटकरी निवासी विष्णु और नन्दकिशोर मौर्य को गिरफ्तार किया है। राष्ट्रीय हिन्दू शेर सेना की सूचना पर पुलिस ने छापा मारा, जहाँ ईसा मसीह से सम्बन्धित प्रचार सामग्री भी मिली।

इससे पहले 5 जून 2026 को मिश्रिख में पकड़ी गयी कथित मतान्तरण सभा की जाँच में कानपुर कनेक्शन सामने आया है। मामले में सुरेन्द्र समेत चार अन्य आरोपियों को भी गिरफ्तार किया गया है। पुलिस के अनुसार आरोपी वर्ष 2002 से ईसाई मिशनरी संगठन सेंट्रल यूपी मिशन से जुड़े थे, जिसका संचालन कानपुर निवासी जानी उर्फ जोनाथन जोशुआ द्वारा किये जाने की बात सामने आई है। इसी नाम से एक व्हाट्सएप समूह भी संचालित था, जिसके माध्यम से ग्रामीणों तक ईसाई प्रचार सामग्री पहुँचाई जाती थी। अपर पुलिस अधीक्षक दक्षिणी के अनुसार आरोपी गाँव-गाँव जाकर प्रचार सामग्री वितरित करते थे तथा लोगों को धर्म परिवर्तन के लिये प्रेरित करते थे। जाँच में यह भी पता चला कि आरोपी सुरेन्द्र ने अपने घर पर अवैध रूप से चर्च बना रखा था, जहाँ प्रत्येक रविवार को प्रार्थना सभा आयोजित होती थी। सेन्ट्रल यूपी मिशन से जुड़े संदिग्ध वित्तीय लेन-देन की भी जाँच की जा रही है।

उल्लेखनीय है कि लुधियाना निवासी सुरेन्द्र पिछले सात वर्षों से मिश्रिख में किराये पर रह रहा था। उस पर आर्थिक रूप से कमजोर ग्रामीणों को धन और अन्य प्रलोभन देकर ईसाई धर्म अपनाने के लिए प्रेरित करने का आरोप है। पुलिस छापेमारी में 17 लोगों को हिरासत में लिया गया था, जिनमें से 16 को गवाह बनाकर छोड़ दिया गया। मौके से बाइबिल, मोमबत्तियाँ और अन्य सामग्री बरामद की गयी।

टीसीएस धर्मान्तरण केस : निदा खान ने स्वीकारा अपना अपराध

मुम्बई। नासिक टीसीएस धर्मान्तरण की मुख्य आरोपी निदा खान ने पुलिस के समक्ष अपना अपराध स्वीकार करते हुए कई अहम खुलासे किये हैं जिसमें उसने आरोप पत्र के अनुसार माना कि वही पीड़िता को नमाज पढ़ना सिखाती थी। निदा खान खुद पुलिस को अपने घर ले गयी और उसने ही उस स्थान की पहचान करवाई जहाँ वह पीड़िता को बुलाकर नमाज पढ़ने का प्रशिक्षण देती थी। पुलिस को इस मामले में डिजिटल और तकनीकी सबूत भी मिले हैं। पीड़िता के मोबाइल फोन की फॉरेंसिक जाँच के दौरान इस्लाम से जुड़ी 37 ऑडियो क्लिप्स बरामद हुई हैं। इसके अलावा मोबाइल में कई यू-ट्यूब लिंक्स और उसके मजहब से जुड़े 4 विशेष मोबाइल ऐप्स भी पाये गये हैं। जाँच में यह स्पष्ट हो गया है कि सभी ऐप्स आरोपी दानिश और निदा ने ही पीड़िता के फोन में इंस्टाल कराये थे। आरोपी तौसीफ सत्तार ने बताया कि टीसीएस ऑफिस का कैफे साजिश का मुख्य अड्डा था।

यह भी पता चला है कि वर्ष 2025 के रमजान महीने के दौरान पीड़िता पर न सिर्फ मानसिक दबाव बनाया गया बल्कि उसे जबरन इस्लामिक नियमों का पालन करने के लिये मजबूर किया गया।

धर्मान्तरण के आरोप में छह पर मुकदमा दर्ज

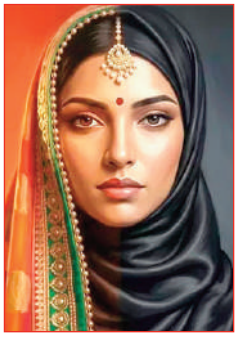

लखनऊ। पारा निवासी एक हिन्दू युवती ने लखनऊ के मवैया निवासी जुबैर अंसारी पर लव-जिहाद करने और फिर अश्लील वीडियो बनाकर दुष्कर्म करने व मतान्तरण के लिये दबाव बनाने का आरोप लगाकर मुकदमा दर्ज करवाया है। युवती ने बताया कि उसे होटल में ले जाकर शादी का लालच दिया गया जहाँ फिर नशीला पदार्थ खिलाकर दुष्कर्म किया गया और वीडियो बनाये गये।

पीड़िता के अनुसार एक बारा आरोपी उसे अपने घर लेकर गया जहाँ उसकी बहन व माँ ने उसे जबर्दस्ती बुर्का पहना दिया और धर्मान्तरण का दबाव बनाया। आर्थिक लाभ का लालच भी दिया गया। जब उसने धर्मान्तरण करने से मना कर दिया तब उसके साथ मारपीट की गयी। पुलिस ने बताया कि पीड़िता की शिकायत पर आरोपित जुबैर अंसारी सहित उसके भाई, बहन और माँ तथा अन्य सहयोगियों पर मुकदमा दर्ज कर जाँच शुरू कर दी गयी है।

शहर से बाहर होंगी मांसाहार की दुकानें

वाराणसी। वाराणसी नगर निगम ने शहर के भीतर संचालित सभी मांस - मछली और पोल्ट्री बाजारों को छह माह के अन्दर शहर से बाहर करने का निर्णय लिया है। महापौर अशोक तिवारी ने बताया कि नगर में मांस मछली की लगभग 400 दुकाने हैं। इसे नगर निगम द्वारा चारों दिशाओं में सुनियोजित तरीके से स्थानान्तरित किया जायेगा। बड़ी संख्या में देशी-विदेशी पर्यटक यहाँ आते हैं। इसलिये शहर को स्वच्छ सुव्यवस्थित रखना और उसकी धार्मिक-सांस्कृतिक पहचान बनाये रखना आवश्यक है।

भारत को वैभवशाली बनाना संघ का मूल ध्येय

कार्यकर्ता विकास वर्ग-प्रथम के समापन समारोह में बोले संघ के सह सरकार्यवाह

लखनऊ। भारत को वैभवशाली बनाना ही संघ का मूल ध्येय है। भारत की पहचान हिन्दू राष्ट्र से है। इस समय देश में मतान्तरण, लव-जिहाद और लैण्ड-जिहाद जैसी गतिविधियों से समाज को बचाना है। ये विचार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह रामदत्त चक्रधर ने व्यक्त किये। वे सरस्वती कुंज, निराला नगर, लखनऊ में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, पूर्वी उत्तर प्रदेश क्षेत्र द्वारा आयोजित कार्यकर्ता विकास वर्ग-प्रथम के समापन समारोह में बोल रहे थे।

उन्होंने कहा कि 2026 का वर्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण है। सौ वर्ष पूर्व डॉ. हेडगेवार ने संघ का बीजारोपण किया था। यह प्रशिक्षण संघ की सामान्य प्रक्रिया का भाग है। हर वर्ष देश भर में 15 से 20 हजार स्वयंसेवकों का प्रशिक्षण होता है। देश भर में 83 हजार शाखाएँ चल रही हैं। विभिन्न क्षेत्रों में 40 से अधिक संगठन संघ की प्रेरणा से कार्य कर रहे हैं। पिछले एक माह में 48 हजार लोगों ने संघ से जुड़ने की इच्छा व्यक्त की है। डॉ. हेडगेवार ने स्वार्थ-केन्द्रित हिन्दू को समाज-केन्द्रित बनाने का कार्य शाखा के माध्यम से किया। संघ की यह शाखा चरित्रवान हिन्दू खड़े करने का कार्य करती है। देश के विभाजन के समय स्वयंसेवकों ने अपने प्राणों की परवाह किये बिना हजारों हिन्दुओं की रक्षा की। चीन युद्ध के समय स्वयंसेवकों ने सेना की सहायता की। इसी कारण 1963 में जवाहरलाल नेहरू ने गणतंत्र दिवस की परेड में स्वयंसेवकों को आमंत्रित किया और कहा था कि संघ राष्ट्रभक्त संगठन है।

हिन्दू सशक्त तो राष्ट्र सशक्त होगा

चक्रधर ने कहा कहा कि झूठे आरोपों को लेकर संघ पर कई बार प्रतिबन्ध लगाया गया, लेकिन सच सामने आने के बाद उसे हटाना पड़ा। उन्होंने कहा कि संघ एक वैचारिक प्रवाह है इसलिये संघ ने स्पष्ट रूप से कहा है कि यह राष्ट्र हिन्दू समाज का है। यदि हिन्दू मजबूत होगा तो राष्ट्र मजबूत होगा और यदि हिन्दू कमजोर होगा तो राष्ट्र भी कमजोर होगा। संघ ने हिन्दू समाज में आत्मबोध जगाने का कार्य किया है। उन्होंने कहा कि हिन्दू का अर्थ पूजा-पद्धति नहीं, बल्कि राष्ट्रीयता से सम्बन्धित है।

● यह समारोह राष्ट्र निर्माण यज्ञ में आहुति का प्रकटीकरण : पद्मश्री रामसरन वर्मा

चक्रधर ने कहा कि संघ भी यही मानता है कि देश केवल कल-कारखानों से नहीं, बल्कि सद्गुणों के संवर्धन से आगे बढ़ता है। स्वामी विवेकानन्द जी कहते थे- "गर्व से कहो, हम हिन्दू हैं।" जब हिन्दू नाम सुनते ही आपको ऊर्जा का अनुभव हो, तब आप हिन्दू कहलाने के अधिकारी हैं। जब दुनिया के किसी भी अकेले हिन्दू का दुःख देखकर आप उसे अपना दुःख मान सकें, तब आप हिन्दू हैं। हिन्दू समाज को प्रलोभन देकर कुछ लोग योजनाबद्ध रूप से मतान्तरण का कार्य कर रहे हैं, जो बन्द होना चाहिये। अच्छा विचार करने वाली सज्जन शक्ति के साथ मिलकर देश को आगे बढ़ाना है।

परिवार व्यवस्था को बचाना होगा

चक्रधर ने पंच परिवर्तन विषयों की चर्चा करते हुए कहा कि हमें अपनी परिवार व्यवस्था को बचाना होगा। इसी प्रकार सामाजिक समरसता को लेकर आगे बढ़ना है। छुआछूत समाज को तोड़ती है, क्योंकि हमारे देश में अनेक महान ऋषि अपने ज्ञान और अध्यात्म के कारण प्रसिद्ध हुए, न कि केवल अपने जन्म के कारण। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपनी कार्यपद्धति में समाज की सभी जातियों को साथ खड़ा करने का कार्य किया है, जन्म के आधार पर नहीं।

पर्यावरण संरक्षण का आह्वान करते हुए उन्होंने कहा कि जल संरक्षण, एकल-प्रयोग प्लास्टिक के उपयोग को रोकने तथा पौधारोपण को बढ़ावा देना चाहिये। उन्होंने कहा कि 'स्व' की चेतना को जगाना होगा और गुलामी की मानसिकता से बाहर निकलना होगा। उन्होंने समाज का आह्वान किया की सभी को नागरिक कर्तव्यों का पालन करते हुए राष्ट्र को वैभवशाली बनाने में योगदान देना चाहिये। राष्ट्र सर्वोपरि राष्ट्र प्रथम है इस भावना से मिलकर सभी को कार्य करना होगा।

देश, धर्म और संस्कृति की रक्षा की जिम्मेदारी स्वयंसेवकों पर

समापन समारोह के प्रमुख अतिथि नव-अन्वेषक एवं प्रगतिशील किसान पद्मश्री रामसरन वर्मा जी ने कहा कि यह एक प्रशिक्षण वर्ग का समापन नहीं है, बल्कि राष्ट्र निर्माण यज्ञ में आहुति का प्रकटीकरण है। यहाँ प्रशिक्षित सभी स्वयंसेवकों की जिम्मेदारी है कि जहाँ भी समाज में अलगाव हो, वहाँ एकजुटता लाएँ। उन्होंने आशा जताई कि देश, धर्म और संस्कृति की रक्षा की जिम्मेदारी भी स्वयंसेवकों पर है।

स्वयंसेवकों का 20 दिन का प्रशिक्षण

कार्यकर्ता विकास वर्ग-प्रथम में पूर्वी उत्तर प्रदेश क्षेत्र के अवध, कानपुर, काशी एवं गोरखपुर प्रान्तों के विभिन्न जनपदों से आये 289 स्वयंसेवकों ने 20 दिनों का प्रशिक्षण प्राप्त किया। स्वयंसेवकों को शारीरिक, बौद्धिक, व्यवस्थापन, सेवा, सम्पर्क, प्रचार एवं संगठनात्मक विषयों का प्रशिक्षण दिया गया, जिससे उनमें नेतृत्व क्षमता, अनुशासन, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं राष्ट्रभाव का विकास हो सके। प्रशिक्षण के दौरान 7 जून को आयोजित कुटुम्ब-सहभोज कार्यक्रम में वर्ग में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे शिक्षार्थियों के लगभग 200 परिवारों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। यह कार्यक्रम संघ के पंच परिवर्तन के अन्तर्गत चल रहे कुटुम्ब प्रबोधन कार्य की भावना को सशक्त करने वाला अवसर बना। परिवारों के बीच संवाद, परिचय एवं सहभागिता के माध्यम से पारस्परिक सम्बन्धों को और अधिक सुदृढ़ बनाया गया। ●

भारत की बेटियों के लिये प्रेरणा हैं मेजर अभिलाषा बराक

भारत की बेटी मेजर अभिलाषा बराक को संयुक्त राष्ट्र के "मिलिट्री जेण्डर एडवोकेट ऑफ़ द ईयर" से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान उन्हें शान्ति मिशन में महिलाओं की भूमिका और उनके दृष्टिकोण को आगे बढ़ाने के लिये दिया गया। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एन्टोनियो गुटेरेस ने पुरस्कार देते हुए कहा कि मेजर बराक उन लोगों के लिये आदर्श हैं जिनके लिये और जिनकेसाथ वो काम करती हैं मेजर अभिलाषा बराक भारत की पहली महिला काम्बैट हेलीकॉप्टर पायलट हैं।

हजारों लोगों की बदली जिन्दगी

संयुक्त राष्ट्र के सहायक महासचिव लिसा बटेनहेम ने कहा कि मेजर बराक के नेतृत्व और नये तरीकों ने सैन्य अभियानों में महिलाओं के शान्ति और सुरक्षा से जुड़े काम को आगे बढ़ाया है। मेजर बराक के काम के विषय में गुटेरेस ने कहा कि स्थानीय समुदायों के साथ भरोसा बनाकर उन्होंने शुरुआती अलार्मिंग नेटवर्क बनाने में मदद की जिससे नागरिकों की सुरक्षा मजबूत हुई। उन्होंने यह भी कहा कि एक फ्रन्टलाइन कमाण्डर के रूप में उन्होंने हजारों महिलाओं और लड़कियों से जुड़कर उन्हें कौशल प्रशिक्षण, शिक्षा और स्वास्थ्य से जुड़े कार्यक्रमों का लाभ दिलाया जिससे उनकी जिन्दगी बदली है।

सपनों का कोई जेण्डर नहीं होता

लेबनान मे तैनात मेजर बराक ने कहा, सपनों का कोई जेण्डर नहीं होता और न ही नेतृत्व साहस या मानवता की सेवा करने की इच्छा शक्ति का कोई जेण्डर होता है। लेबनान अभी यूएन का सबसे खतरनाक शान्ति स्थापना वाला इलाका है। मेजर बराक ने कहा कि यह पुरस्कार इस बात की याद दिलाता है कि स्थायी शान्ति तभी बनती है जब हर आवाज सुनी जाये और हर व्यक्ति को आगे बढ़ने का अवसर मिले। उन्हाने कहा भारतीय सेना की पहली महिला काम्बैट हेलीकॉप्टर पायलट होने के नाते मैंने खुद अनुभव किया है कि जब अवसर मिलता है तो महिलाएँ कैसे हर बाधा को पार कर सकती है। ●

कौन हैं मेजर अभिलाषा बराक?

मेजर अभिलाषा बराक मूलतः हरियाणा के रोहतक की हैं। उन्हें सितम्बर 2018 में आर्मी एयर डिफेंस कोर में कमीशन मिला। उन्होंने 28 सितम्बर 2019 को आर्मी एयर डिफेंस कोर दल का नेतृत्व किया। उन्होंने 2016 में दिल्ली प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। 2017 में चेन्नई स्थित अधिकारी प्रशिक्षण अकादमी से प्रशिक्षण प्राप्त किया। 2022 में पहली महिला लड़ाकू विमान चालक बनने के लिये वे जानी जाती हैं। उन्होंने महाराष्ट्र के नासिक स्थित लड़ाकू सेना विमानन विद्यालय में यूनिट 6657 आर्मी एविएशन कोर में एक वर्ष का प्रशिक्षण पूरा किया। ●

प्रधानमंत्री ने दी बधाई

संयुक्त राष्ट्र द्वारा सम्मानित किये जाने के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उन्हें बधाई देते हुए लिखा कि यह सम्मान उनकी सेवाओं को मान्यता है और साथ ही संयुक्तराष्ट्र शान्ति अभियानों में भारत के लम्बे योगदान का भी सम्मान है। उनकी यह उपलब्धि अनगिनत युवा भारतीयों विशेषकर बेटियों के लिये प्रेरणा है। अभिलाषा बराक तीसरी भारतीय महिला हैं जिन्हें यह सम्मान मिला है। वह वर्तमान में लेबनान में संयुक्त राष्ट्र संघ के मिशन पर तैनात हैं।

गमलों में उगा रहीं आत्मनिर्भरता
हरियाली से बदल रहीं जिन्दगी

लखनऊ। राजधानी की अनेक महिलाएँ पर्यावरण संरक्षण को आजीविका से जोड़ते हुए पौधों की नर्सरी संचालित कर आत्मनिर्भर बन रही हैं। वे छतों, बालकनियों और आंगनों को हराभरा बनाने के साथ पौधे, इनडोर प्लांट्स और जैविक खाद तैयार कर ऑनलाइन तथा ऑफलाइन माध्यम से बिक्री कर रही हैं।

केडी सिंह बाबू स्टेडियम के पास पौधे बेचने वाली गुड़िया ने पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से पौधे लगाने की शुरुआत की थी। सोशल मीडिया से नर्सरी संचालन की जानकारी जुटाकर उन्होंने दो वर्ष पहले इसे व्यवसाय का रूप दिया, जो आज उनका प्रमुख रोजगार बन चुका है।

गोमतीनगर के विशालखंड निवासी निवेदिता सोनकर भी नर्सरी व्यवसाय के माध्यम से आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ रही हैं। वहीं लालबाग की दीप्ति चोपड़ा पिछले तीन वर्षों से इस क्षेत्र में सक्रिय हैं। वे पौधों की बिक्री के साथ लोगों की छतों को सुन्दर गार्डन में भी परिवर्तित कर रही हैं, जिसकी शुरुआती लागत पाँच हजार रुपये है।

दीप्ति, गुड़िया और निवेदिता के अनुसार उनके लगभग 60 प्रतिशत ग्राहक महिलाएँ हैं। हाल के वर्षों में उपहार के रूप में पौधे देने का चलन बढ़ा है। लोग पारम्परिक उपहारों के बजाय ऐसे पौधों को प्राथमिकता दे रहे हैं, जो घर की सुन्दरता बढ़ाने के साथ पर्यावरण संरक्षण में भी योगदान देते हैं। उनकी यह पहल हरियाली और आत्मनिर्भरता का प्रेरक उदाहरण बन रही है। ●

◆ डॉ वी.के. सिंह

प्राकृतिक खेती में कम लागत में ज्यादा कमायी

देश में बढ़ती खेती की लागत और घटते मुनाफे के बीच अब किसान कम लागत वाली खेती की ओर तेजी से रुख कर रहे हैं। रासायनिक खाद, महँगे बीज और कीटनाशकों पर बढ़ते खर्च ने किसानों की चिन्ता बढ़ा दी है। ऐसे में प्राकृतिक खेती, जैविक खेती और आधुनिक कृषि तकनीकों का प्रयोग किसानों के लिये राहत का बड़ा माध्यम बनता जा रहा है। कृषि विशेषज्ञों का कहना है कि यदि किसान सही योजना, आधुनिक तकनीक और बाजार की माँग के अनुसार खेती करें, तो कम लागत में भी अधिक मुनाफा कमाया जा सकता है। विशेषज्ञों के अनुसार कम लागत की खेती केवल खर्च कम करने का तरीका नहीं है, बल्कि यह मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने, उत्पादन सुधारने और खेती को लम्बे समय तक टिकाऊ बनाने का माध्यम भी है। यही कारण है कि अब देश के कई राज्यों में किसान प्राकृतिक खेती, ड्रिप सिंचाई, मल्चिंग और सहफसली खेती जैसी तकनीकों को तेजी से अपना रहे हैं।

जैविक खेती की ओर बढ़ा रुझान

रासायनिक उर्वरकों और जहरीले कीटनाशकों के दुष्प्रभाव सामने आने के बाद किसान अब प्राकृतिक और जैविक खेती की ओर आकर्षित हो रहे हैं। किसान देसी गाय के गोबर और गोमूत्र से तैयार जीवामृत, घन जीवामृत और बीजामृत का उपयोग कर रहे हैं। इसके अलावा गोबर खाद, हरी खाद, वर्मी कम्पोस्ट और नीम आधारित उत्पादों का प्रयोग भी तेजी से बढ़ रहा है। कृषि वैज्ञानिकों का मानना है कि जीवामृत मिट्टी में सूक्ष्म पोषक तत्वों की मात्रा बढ़ाता है और फसल की वृद्धि में मदद करता है। वहीं वर्मी कम्पोस्ट मिट्टी की गुणवत्ता सुधारने के साथ-साथ उत्पादन क्षमता भी बढ़ाता है। सबसे बड़ी बात यह है कि किसान इन जैविक खादों को अपने खेत या घर पर ही कम लागत में तैयार कर सकते हैं।

सहफसली खेती से अतिरिक्त आय

कम लागत में अधिक कमाई के लिये सहफसली खेती को सबसे प्रभावी मॉडल माना जा रहा है। इस पद्धति में किसान मुख्य फसल के साथ दूसरी फसलें भी उगाते हैं। इससे खेत खाली नहीं रहता और एक साथ कई फसलों से आय प्राप्त होती है।

उदाहरण के तौर पर किसान टमाटर के साथ धनिया, गन्ने के साथ सब्जियाँ, आलू के साथ काहू या धनिया तथा पपीते के साथ खीरा या तरबूज की खेती कर रहे हैं। इससे खेती का जोखिम भी कम होता है और किसानों को लगातार आमदनी मिलती रहती है।

मल्चिंग तकनीक से बच रहा पानी

मल्चिंग तकनीक आज सब्जी और फल उत्पादक किसानों के बीच काफी लोकप्रिय हो रही है। इस तकनीक में खेत की मिट्टी को प्लास्टिक शीट, पराली या सूखी पत्तियों से ढक दिया जाता है। इससे मिट्टी की नमी लम्बे समय तक बनी रहती है और खरपतवार कम उगते हैं।

विशेषज्ञों के अनुसार मल्चिंग तकनीक से पानी की बचत होती है और उत्पादन में 20 से 30 प्रतिशत तक वृद्धि हो सकती है। टमाटर, मिर्च, खीरा और तरबूज जैसी फसलों में यह तकनीक काफी उपयोगी साबित हो रही है।

ड्रिप सिंचाई बन रही वरदान

पानी की कमी को देखते हुए किसान अब ड्रिप सिंचाई यानी टपक सिंचाई तकनीक को तेजी से अपना रहे हैं। इस पद्धति में पानी बूँद-बूँद करके सीधे पौधों की जड़ों तक पहुँचाया जाता है। इससे पानी की 40 से 60 प्रतिशत तक बचत होती है और पौधों को जरूरत के अनुसार नमी मिलती रहती है। ड्रिप सिंचाई के माध्यम से खाद भी आसानी से दी जा सकती है, जिससे फसल की गुणवत्ता बेहतर होती है। सरकार भी इस तकनीक को बढ़ावा देने के लिये किसानों को सब्सिडी उपलब्ध करा रही है। विशेष रूप से फल और सब्जी की खेती में यह तकनीक काफी लाभदायक मानी जा रही है।

पॉलीहाउस या शेडनेट खेती से लाभ

पॉलीहाउस और शेडनेट खेती आधुनिक कृषि का महत्वपूर्ण हिस्सा बनते जा रहे हैं। नियंत्रित वातावरण में की जाने वाली इस खेती में मौसम का प्रभाव कम पड़ता है और सालभर फसल उत्पादन सम्भव होता है। विशेषज्ञों के अनुसार पॉलीहाउस में उगायी गयी सब्जियाँ और फूल बाजार में अधिक कीमत पर बिकते हैं। हालाँकि इसमें शुरुआती निवेश थोड़ा अधिक होता है, लेकिन इससे होने वाला मुनाफा सामान्य खेती की तुलना में दो से चार गुना तक अधिक हो सकता है।

कम लागत वाली फसलें पहली पसन्द

कम खर्च और जल्दी उत्पादन देने वाली फसलों की ओर किसानों का रुझान बढ़ रहा है। खीरा, लौकी, भिण्डी और टमाटर जैसी सब्जियाँ 30 से 60 दिनों में उत्पादन देना शुरू कर देती हैं और बाजार में इनकी माँग हमेशा बनी रहती है। इसके अलावा तुलसी, अश्वगंधा, एलोवेरा और सर्पगंधा जैसी औषधीय फसलों की खेती भी तेजी से बढ़ रही है। आयुर्वेद और हर्बल उत्पादों की बढ़ती माँग के कारण इन फसलों की बाजार में अच्छी कीमत मिल रही है। ●

लेखक कृषि विज्ञान केन्द्र अम्बरपुर, सीतापुर (उत्तर प्रदेश) में कृषि वैज्ञानिक हैं।

ध्येय पथ पर बढ़ रहे हैं

ध्येय पथ पर बढ़ रहे हैं,
एक ही विश्वास लेकर।
एक ही आधार लेकर ।।

शैल से जो सिन्धु तक है,
पुण्य-भू है, मातृ-भू है,
श्रेष्ठ जग से यह हमारी
धर्म-भू है, कर्म भू है,
पूज्य इसको ही समझकर,
वन्दना हम कर रहे हैं,
एक स्वर से गीत गाकर।
एक ही आधार लेकर।। 1।।

बाल रवि सा भाव लेकर
जो फहरता है गगन में,
त्याग का संदेश देता जो
लहरता कोटि उर में,
स्वर्ण-गैरिक उसी ध्वज की
अर्चना हम कर रहे हैं।
एक गुरु का मान देकर।
एक ही आधार लेकर।। 2।।

एक नेता, एक ही पथ,
बस यही है मार्ग अपना,
देश है यह हिन्दुओं का,
बस यही है सत्य अपना,
सत्य को साकार करने
साधना हम कर रहे हैं।
संगठन का मन्त्र लेकर।
एक ही आधार लेकर।। 3।।

राक्षस का भय

एक नगर में भद्रसेन नाम का राजा रहता था। उसकी कन्या रत्नवती बहुत रूपवती थी। उसे हर समय यही डर रहता था कि कोई राक्षस उसका अपहरण न करले। उसके महल के चारों ओर पहरा रहता था, फिर भी वह सदा डर से कांपती रहती थी। रात के समय उसका डर और भी बढ़ जाता था।

एक रात एक राक्षस पहरेदारों की नज़र बचाकर रत्नवती के घर में घुस गया। घर के एक अन्धेरे कोने में जब वह छिपा हुआ था तो उसने सुना कि रत्नवती अपनी एक सहेली से कह रही है 'यह दुष्ट विकाल मुझे हर समय परेशान करता है, इसका कोई उपाय कर।' राजकुमारी के मुख से यह सुनकर राक्षस ने सोचा कि अवश्य ही विकाल नाम का कोई दूसरा राक्षस होगा, जिससे राजकुमारी इतनी डरती है। किसी तरह यह जानना चाहिये कि वह कैसा है? कितना बलशाली है ? यह सोचकर वह घोड़े का रूप धारण करके अश्वशाला में जा छिपा। उसी रात कुछ देर बाद एक चोर उस राज-महल में आया। वह वहाँ घोड़ों की चोरी के लिये ही आया था। अश्वशाला में जा कर उसने घोड़ों की देखभाल की और अश्वरूपी राक्षस को ही सबसे सुन्दर घोड़ा देखकर वह उसकी पिठ पर चढ़ गया। अश्वरूपी राक्षस ने समझा कि अवश्यमेव यह व्यक्ति ही विकाल राक्षस है और मुझे पहचान कर मेरी हत्या के लिये ही यह मेरी पीठ पर चढ़ा है। किन्तु अब कोई चारा नहीं था। उसके मुख में लगाम पड़ चुकी थी। चोर के हाथ में चाबुक थी। चाबुक लगते ही वह भाग खड़ा हुआ। कुछ दूर जाकर चोर ने उसे ठहरने के लिये लगाम खींची, लेकिन घोड़ा भागता ही गया। उसका वेग कम होने के स्थान पर बढ़ता ही गया। तब, चोर के मन में शंका हुई, यह घोड़ा नहीं बल्कि घोड़े की सूरत में कोई राक्षस है, जो मुझे मारना चाहता है। किसी ऊबड़-खाबड़ जगह पर ले जाकर यह मुझे पटक देगा। मेरी हड्डी-पसली टूट जायेगी।

यह सोच ही रहा था कि सामने वटवृक्ष की एक शाखा आयी। घोड़ा उसके नीचे से गुजरा। चोर ने घोड़े से बचने का उपाय देखकर शाखा को दोनों हाथों से पकड़ लिया। घोड़ा नीचे से चला गया, चोर वृक्ष की शाखा से लटक कर बच गया।

उसी वृक्ष पर अश्वरूपी राक्षस का एक मित्र बन्दर रहता था। उसने डर से भागते हुये अश्वरूपी राक्षस को बुलाकर कहा- 'मित्र! डरते क्यों हो? यह कोई राक्षस नहीं, बल्कि मामूली मनुष्य है। तुम चाहो तो इसे एक क्षण में खाकर पचा कर लो।' चोर को बन्दर पर बड़ा क्रोध आ रहा था। बन्दर उससे दूर ऊँची शाखा पर बैठा हुआ था। किन्तु उसकी लम्बी पूँछ चोर के मुख के सामने ही लटक रही थी। चोर ने क्रोधवश उसकी पूँछ को अपने दान्तों में भींच कर चबाना शुरु कर दिया। बन्दर को पीड़ा तो बहुत हुई लेकिन मित्र राक्षस के सामने चोर की शक्ति को कम बताने के लिये वह वहाँ बैठा ही रहा। फिर भी, उसके चेहरे पर पीड़ा की छाया साफ नजर आ रही थी। उसे देखकर राक्षस ने कहा- 'मित्र! चाहे तुम कुछ ही कहो, किन्तु तुम्हारा चेहरा कह रहा है कि तुम विकाल राक्षस के पंजे में आ गये हो।' यह कह कर वह भाग गया।

शिक्षा : कठिन समय में भी सूझ-बूझ नहीं खोनी चाहिये।

बाल प्रश्नोतरी

1- परमाणु का सबसे छोटा कण कौन सा है?
क- प्रोट्रान ख- इलेक्ट्रॉन
ग- न्यूट्रॉन घ- नाभिक

2- सबसे हलकी धातु कौन सी है?
क- सोडियम ख- लिथियम
ग- पोटैशियम घ- मैग्नीशियम

3- सबसे भारी धातु कौन सी है?
क- सोना ख- प्लैटिनियम
ग- चाँदी घ- ऑस्मियम

4- मनुष्य के शरीर में पायी जाने वाली सबसे अधिक कौन सी धातु है?
क- आयरन ख- कैल्शियम
ग- सोडियम घ- पोटैशियम

5- सबसे हल्की गैस कौन सी है?
क- ऑक्सीजन ख- नाइट्रोजन
ग- हीलियम घ- हाइड्रोजन

6- सबसे निष्क्रिय गैस कौन सी है?
क- ऑक्सीजन ख- नाइट्रोजन
ग- हीलियम घ- हाइड्रोजन

उत्तर : 1.(ख), 2.(ख), 3.(घ), 4(ख), 5.(घ), 6.(ग), 7.(क)

ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया-आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा : विक्रम संवत्-2083

व्रत-पर्व

16 जून	आषाढ़ मास आरम्भ
18 जून	गणेश चतुर्थी
20 जून	अरण्य षष्ठी
21 जून	दशाश्वमेध घाट स्नान प्रारम्भ (वाराणसी)
22 जून	मासिक दुर्गाष्टमी
23 जून	महेश नवमी
25 जून	निर्जला एकादशी, गायत्री जयन्ती
27 जून	प्रदोष व्रत
29 जून	ज्येष्ठ पूर्णिमा, कबीरदास जयन्ती

स्मरणीय तिथियाँ

17 जून (पुण्यतिथि)	बालासाहेब देवरस, जीजाबाई, रानी लक्ष्मीबाई
18 जून (जयन्ती)	के एस सुदर्शन, गोवा क्रान्ति दिवस
18 जून इतिहास-स्मृति	हल्दीघाटी का महासमर
20 जून (जयन्ती)	डॉ विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
20 जून (पुण्यतिथि)	राजा दाहिरसेन
21 जून (जयन्ती)	विष्णु प्रभाकर
21 जून (पुण्यतिथि)	केशव बलिराम हेडगेवार
21 जून	अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस, विश्व संगीत दिवस
22 जून (पुण्यतिथि)	केदारनाथ अग्रवाल, भदन्त आनन्द कौसल्यायन
23 जून (जयन्ती)	राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी
23 जून (पुण्यतिथि)	श्यामा प्रसाद मुखर्जी, बालाजी बाजीराव
24 जून (पुण्यतिथि)	रानी दुर्गावती, पंडित श्रद्धाराम शर्मा
24 जून (जयन्ती)	दामोदर हरि चापेकर
25 जून (इतिहास-स्मृति)	लोकतन्त्र पर काला धब्बा
26 जून (पुण्यतिथि)	स्वामी सहजानन्द सरस्वती
26 जून (जयन्ती)	बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय, तरुण सागर
27 जून (पुण्यतिथि)	रणजीत सिंह, सैम मानेकशॉ
28 जून (जयन्ती)	शिवप्रसाद गुप्त
28 जून (जयन्ती)	भामाशाह
29 जून (जयन्ती)	देवकीनन्दन खत्री
29 जून (पुण्यतिथि)	सरदार बलदेव सिंह
30 जून (जयन्ती)	नागार्जुन, मुकुट बिहारी लाल भार्गव

पाक्षिक राशिफल

ज्योतिर्विद पं. दिवाकर त्रिपाठी
निदेशक- उत्थान ज्योतिष एवं अध्यात्म संस्थान

मेष राशि-

मानसिक तनाव में वृद्धि सम्भव है। पिता के स्वास्थ्य को लेकर तनाव हो सकता है। सन्तान पक्ष से सामान्य चिन्ता की स्थिति बन सकती है। अध्ययन अध्यापन में अवरोध की स्थिति बन सकती है।

वृषभ राशि-

करियर में परिवर्तन की स्थिति बन सकती है। सामाजिक पद प्रतिष्ठा एवं सम्मान में वृद्धि की स्थिति बनेगी। अध्ययन-अध्यापन में अवरोध की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है।

मिथुन राशि-

सीने की तकलीफ में वृद्धि हो सकती है। नौकरी तथा व्यवसाय में परिवर्तन की स्थिति बन सकती है। आर्थिक गतिविधियों में सुधार होगा। गृह एवं वाहन को लेकर सतर्क रहें। स्वास्थ्य पर ध्यान रखें।

कर्क राशि-

चोट अथवा ऑपरेशन की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। धन में वृद्धि का संयोग बनेगा। वाणी की तीव्रता में वृद्धि सम्भव है। गृह एवं वाहन सुख में वृद्धि की सम्भावना बनेगी। काम की रुकावट दूर होगी।

सिंह राशि-

क्रोध पर नियंत्रण रखें। आर्थिक व्यवस्था में सुधार हो सकता है। सीने की तकलीफ में वृद्धि भी हो सकती है। आकस्मिक धन के खर्च या धन हानि से बचें। पारिवारिक जीवन में समस्या हो सकती है।

कन्या राशि-

दैनिक आय में अवरोध हो सकता है। आँखों की समस्या के कारण तनाव हो सकता है। पेट पेशाब एवं आन्तरिक समस्या के कारण तनाव हो सकता है। दाम्पत्य जीवन में अवरोध की स्थिति बन सकती है।

तुला राशि-

करियर में बड़ी सफलता सम्भव है। आर्थिक गतिविधियों में सुधार हो सकता है। भाई, बहनों, मित्रों से लाभ की स्थिति बन सकती है। आँखों की समस्या के कारण तनाव उत्पन्न हो सकता है। वैवाहिक मामले बिगड़ सकते हैं।

वृश्चिक राशि-

कार्यों में भाग्य का साथ प्राप्त होगा। सन्तान पक्ष को लेकर चिन्ता की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। अध्ययन अध्यापन में अवरोध हो सकता है। क्रोध में तीव्रता हो सकती है। करियर में विशेष सफलता मिलेगी।

धनु राशि-

बौद्धिक क्षमता के आधार पर सकारात्मक परिवर्तन हो सकता है। सीने की तकलीफ के कारण कष्ट हो सकता है। स्वास्थ्य के कारण करियर में अवरोध हो सकता है। आर्थिक गतिविधियों में सुधार होगा।

मकर राशि-

मनोबल में स्थिरता, पराक्रम एवं सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगा। सीने की तकलीफ सम्भव। दाम्पत्य जीवन में तनाव अथवा अवरोध की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। नौकरी एवं व्यापार में स्थान परिवर्तन हो सकता है।

कुम्भ राशि-

पेट एवं पैर की समस्या तनाव दे सकता है। वाणी की तीव्रता में वृद्धि हो सकती है। मनोबल में सकारात्मक बनी रहेगी। दैनिक आय में प्रगति एवं परिवर्तन की स्थिति बन सकती है।

मीन राशि-

स्वास्थ्य की समस्यायें दूर होती जायेंगी। सन्तान पक्ष से तनाव उत्पन्न हो सकती है। पिता के स्वास्थ्य को लेकर तनाव हो सकता है। दाम्पत्य जीवन में अवरोध की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

नवनिर्माण के 9 वर्ष

पहले था डर
आज अपना घर

अपना यूपी बदल गया

2017 से पहले सरकारी एवं निजी भूमि पर माफिया का कब्जा

2017 के बाद माफिया से मुक्त कराई भूमि पर गरीबों को आवास

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

UPGovtOfficial CMOUttarpradesh CMOfficeUP

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, पूर्वी उत्तर प्रदेश क्षेत्र
कार्यकर्ता विकास वर्ग- प्रथम
समापन समारोह